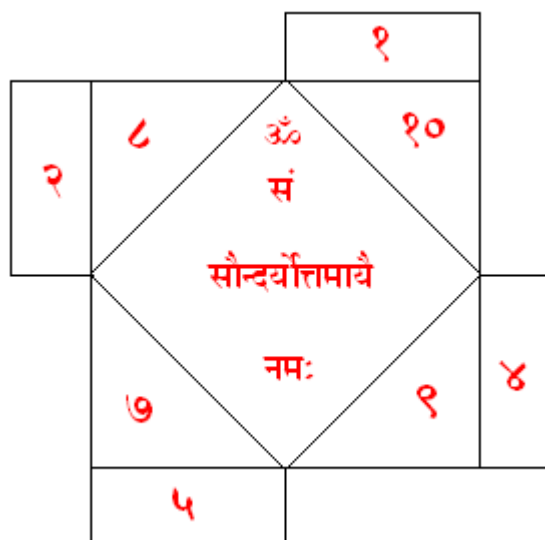


सौन्दर्योत्तमायै नमः, सौन्दर्योत्तमायै नमः “सौन्दर्योत्तमायै-
सौन्दर्योत्तमायै” साधना

वशीकरण, सम्मोहन व आकर्षण हेतु “सौन्दर्योत्तमायै-सौन्दर्योत्तमायै” साधना



इस यन्त्र को चमेली की लकड़ी की कलम से, भोजपत्र पर कुंकुम या कस्तुरी की स्याही से निर्माण करे। इस यन्त्र की साधना पूर्णिमा की रात्री से करें। रात्री में स्नानादि से पवित्र होकर एकान्त कमरे में आम की लकड़ी के पट्टे पर सफेद वस्त्र बिछावें, स्वयं भी सफेद वस्त्र धारण करें, सफेद आसन पर ही यन्त्र निर्माण व पूजन करने हेतु बैठें। पट्टे पर यन्त्र रखकर धूप-दीपादि से पूजन करें। सफेद पुष्प चढ़ाये। फिर पाँच माला “ॐ सं सौन्दर्योत्तमायै नमः” नित्य पाँच रात्रि करें। पांचवे दिन रात्री में एक माला देशी घी व सफेद चन्दन के चूरे से हवन करें। हवन में आम की लकड़ी व चमेली की लकड़ी का प्रयोग करें।

सौन्दर्योत्तमायै नमः, सौन्दर्योत्तमायै नमः

सौन्दर्योत्तमायै नमः, सौन्दर्योत्तमायै नमः

१०. “बारा राखौ, बरैनी, मूँह म राखौ कालिका। चण्डी म राखौ मोहिनी, भुजा म राखौ जोहनी। आगू म राखौ सिलेमान, पाछे म राखौ जमादार। जाँघे म राखौ लोहा के झार, पिण्डरी म राखौ सोखन वीर। उल्टन काया, पुल्टन वीर, हाँक देत हनुमन्ता छुटे। राजा राम के परे दोहाई, हनुमान के पीड़ा चौकी। कीर करे बीट बिरा करे, मोहिनी-जोहिनी सातों बहिनी। मोह देबे जोह देबे, चलत म परिहारिन मोहों। मोहों बन के हाथी, बत्तीस मन्दिर के दरबार मोहों। हाँक परे भिरहा मोहिनी के जाय, चेत सम्हार के। सत गुरु साहेब।”

विधि- उक्त मन्त्र स्वयं सिद्ध है तथा एक सज्जन के द्वारा अनुभूत बतलाया गया है। फिर भी शुभ समय में १०८ बार जपने से विशेष फलदायी होता है। नारियल, नींबू, अगर-बत्ती, सिन्दूर और गुड़ का भोग लगाकर १०८ बार मन्त्र जपे।

मन्त्र का प्रयोग कोर्ट-कचहरी, मुकदमा-विवाद, आपसी कलह, शत्रु-वशीकरण, नौकरी-इण्टरव्यू, उच्च अधिकारियों से सम्पर्क करते समय करे। उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए इस प्रकार जाँए कि मन्त्र की समाप्ति ठीक इच्छित व्यक्ति के सामने हो।

ॐ श्री गणेशाय नमः, ॐ श्री गणेशाय नमः

“ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं वाराह-दन्ताय भैरवाय नमः।”

विधि- ‘शूकर-दन्त’ को अपने सामने रखकर उक्त मन्त्र का होली, दीपावली, दशहरा आदि में १०८ बार जप करे।

फिर इसका ताबीज बनाकर गले में पहन लें। ताबीज धारण करने वाले पर जादू-टोना, भूत-प्रेत का प्रभाव नहीं होगा। लोगों का वशीकरण होगा। मुकदमें में विजय प्राप्ति होगी। रोगी ठीक होने लगेगा। चिन्ताएँ दूर होंगी और शत्रु परास्त होंगे। व्यापार में वृद्धि होगी।

ॐ हनुमन्त बसे, भैरु बसे कपार।

“हथेली में हनुमन्त बसे, भैरु बसे कपार।

नरसिंह की मोहिनी, मोहे सब संसार।

मोहन रे मोहन्ता वीर, सब वीरन में तेरा सीर।

सबकी नजर बाँध दे, तेल सिन्दूर चढ़ाऊँ तुझे।

तेल सिन्दूर कहाँ से आया ? कैलास-पर्वत से आया।

कौन लाया, अञ्जनी का हनुमन्त, गौरी का गनेश लाया।

काला, गोरा, तोतला-तीनों बसे कपार।

बिन्दा तेल सिन्दूर का, दुश्मन गया पाताल।

दुहाई कमिया सिन्दूर की, हमें देख शीतल हो जाए।

सत्य नाम, आदेश गुरु की। सत् गुरु, सत् कबीर।

विधि- आसाम के ‘काम-रूप कामाख्या, क्षेत्र में ‘कामीया-सिन्दूर’ पाया जाता है। इसे प्राप्त कर लगातार सात रविवार तक उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रयोग के समय ‘कामीया सिन्दूर’ पर ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अपने माथे पर टीका लगाए। ‘टीका’ लगाकर जहाँ जाएँगे, सभी वशीभूत होंगे।

ॐ नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्रत्र-किरणाय ऐं अतुल-बल-पराक्रमाय नव-ग्रह-दश-दिक्-पाल-लक्ष्मी-देव-वाय,

धर्म-कर्म-सहितायै ‘अमुक’ नाथय नाथय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, दासानुदासं कुरु-कुरु, वश कुरु-कुरु स्वाहा।”

विधि- सूर्यदेव का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का १०८ बार जप प्रतिदिन ९ दिन तक करने से ‘आकर्षण’ का कार्य सफल होता है।

२. “ऐं पिन्स्थां कलीं काम-पिशाचिनी शिघ्रं ‘अमुक’ ग्राह्य ग्राह्य, कामेन मम रूपेण वशैः विदारय विदारय, द्रावय द्रावय, प्रेम-पाशे बन्धय बन्धय, ॐ श्रीं फट्।”

विधि- उक्त मन्त्र को पहले पर्व, शुभ समय में २०००० जप कर सिद्ध कर लें। प्रयोग के समय ‘साध्य’ के नाम का स्मरण करते हुए प्रतिदिन १०८ बार मन्त्र जपने से ‘वशीकरण’ हो जाता है।

ॐ पीर बजरङ्गी, राम लक्ष्मण के सङ्गी। जहाँ-जहाँ जाए, फतह के डङ्के बजाय। ‘अमुक’ को मोह के, मेरे पास न लाए, तो अञ्जनी का पूत न कहाय। दुहाई राम-जानकी की।”

विधि- ११ दिनों तक ११ माला उक्त मन्त्र का जप कर इसे सिद्ध कर ले। ‘राम-नवमी’ या ‘हनुमान-जयन्ती’ शुभ दिन है। प्रयोग के समय दूध या दूध निर्मित पदार्थ पर ११ बार मन्त्र पढ़कर खिला या पिला देने से, वशीकरण होगा।

ॐ अमुक-नाम्ना ॐ नमो वायु-सूनुवे झटिति आकर्षय-आकर्षय स्वाहा।”

विधि- केसर, कस्तुरी, गोरोचन, रक्त-चन्दन, श्वेत-चन्दन, अम्बर, कर्पूर और तुलसी की जड़ को घिस या पीसकर स्याही बनाए। उससे द्वादश-दल-कलम जैसा ‘यन्त्र’ लिखकर उसके मध्य में, जहाँ पराग रहता है, उक्त मन्त्र को लिखे। ‘अमुक’ के स्थान पर ‘साध्य’ का नाम लिखे। बारह दलों में क्रमशः निम्न मन्त्र लिखे- १. हनुमते नमः, २. अञ्जनी-सूनुवे नमः, ३. वायु-पुत्राय नमः, ४. महा-बलाय नमः, ५. श्रीरामेष्टाय नमः, ६. फाल्गुन-सखाय नमः, ७. पिङ्गाक्षाय नमः, ८. अमित-विक्रमाय नमः, ९. उदधि-क्रमणाय नमः, १०. सीता-शोक-विनाशकाय नमः, ११. लक्ष्मण-प्राण-दाय नमः और १२. दश-मुख-दर्प-हराय नमः।

यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा करके षोडशोपचार पूजन करते हुए उक्त मन्त्र का ११००० जप करें। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए लाल चन्दन या तुलसी की माला से जप करें। आकर्षण हेतु अति प्रभावकारी है।

सिद्ध मोहन मन्त्र

क० “ॐ नमः काम-देवाय । सहकल सहद्रश सहमसह लिए वन्हे धुनन जनममदर्शनं उत्कण्ठितं कुरु कुरु, दक्ष दक्षु-धर कुसुम-वाणेन हन हन स्वाहा ।”

विधि:- कामदेव के उक्त मन्त्र को तीनों काल, एक-एक माला, एक मास तक जपे, तो सिद्ध हो जायेगा । प्रयोग करते समय जिसे देखकर जप करेंगे, वही वश में होगा ।

सिद्ध मोहन मन्त्र

क० “ॐ अं आं इं ईं उं ऊं हूँ फट् ।”

विधि:- ताम्बूल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साध्या को खिलाने से उसे खिलानेवाले के ऊपर मोह उत्पन्न होता है ।

ख० “ॐ नमो भगवती पाद-पङ्कज परागेभ्यः ।”

ग० “ॐ भीं क्षां भीं मोहय मोहय ।”

विधि:- किसी पर्व काल में १२५ माला अथवा १२,५०० बार मन्त्र का जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए । बाद में प्रयोग के समय किसी भी एक मन्त्र को तीन बार जप करने से आस-पास के व्यक्ति मोहित होते हैं

श्री कामदेव का मन्त्र

(मोहन करने का अमोघ शस्त्र)

क० “ॐ नमो भगवते काम-देवाय श्रीं सर्व-जन-प्रियाय सर्व-जन-सम्मोहनाय ज्वल-ज्वल, प्रज्वल-प्रज्वल, हन-हन, वद-वद, तप-तप, सम्मोहय-सम्मोहय, सर्व-जनं मे वशं कुरु-कुरु स्वाहा ।”

विधि:- उक्त मन्त्र का २१,००० जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है । तद्दशांश हवन-तर्पण-मार्जन-ब्रह्मभोज करे । बाद में नित्य कम-से-कम एक माला जप करे । इससे मन्त्र में चैतन्यता होगी और शुभ परिणाम मिलेंगे ।

प्रयोग हेतु फल, फूल, पान कोई भी खाने-पीने की चीज उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साध्य को दे ।

उक्त मन्त्र द्वारा साधक का बैरी भी मोहित होता है । यदि साधक शत्रु को लक्ष्य में रखकर नित्य ७ दिनों तक

३००० बार जप करे, तो उसका मोहन अवश्य होता है ।

३० दृष्टि द्वारा मोहन करने का मन्त्र

क० “ॐ नमो भगवति, पुर-पुर वेशनि, सर्व-जगत-भयंकरि ह्रीं ह्रीं, ॐ रां रां रां क्लीं वालौ सः चव काम-बाण, सर्व-श्री समस्त नर-नारीणां मम वश्यं आनय आनय स्वाहा ।”

विधि:- किसी भी सिद्ध योग में उक्त मन्त्र का १०००० जप करे । बाद में साधक अपने मुहँ पर हाथ फेरते हुए उक्त मन्त्र को १५ बार जपे । इससे साधक को सभी लोग मान-सम्मान से देखेंगे ।

४० तेल अथवा इत्र से मोहन

क० “ॐ मोहना रानी-मोहना रानी चली सैर को, सिर पर धर तेल की दोहनी । जल मोहूँ थल मोहूँ, मोहूँ सब संसार । मोहना रानी पलँग चढ़ बैठी, मोह रहा दरबार । मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । दुहाई गौरा-पार्वती की, दुहाई बजरंग बली की ।

ख० “ॐ नमो मोहना रानी पलँग चढ़ बैठी, मोह रहा दरबार । मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । दुहाई लोना चमारी की,

दुहाई गौरा-पार्वती की। दुहाई बजरंग बली की।”

विधि:- ‘दीपावली’ की रात में स्नानादिक कर पहले से स्वच्छ कमरे में ‘दीपक’ जलाए। सुगन्धबाला तेल या इत्र तैयार रखे। लोबान की धूनी दे। दीपक के पास पुष्प, मिठाई, इत्र इत्यादि रखकर दोनों में से किसी भी एक मन्त्र का २२ माला ‘जप’ करे। फिर लोबान की ७ आहुतियाँ मन्त्रोच्चार-सहित दे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होगा तथा तेल या इत्र प्रभावशाली बन जाएगा। बाद में जब आवश्यकता हो, तब तेल या इत्र को ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर स्वयं लगाए। ऐसा कर साधक जहाँ भी जाता है, वहाँ लोग उससे मोहित होते हैं। साधक को सूझ-बूझ से व्यवहार करना चाहिए। मन चाहे कार्य अवश्य पूरे होंगे।

□□□□ □□□□ □□□□□□

श्री भैरव मन्त्र

“ॐ गुरुजी काला भैरुँ कपिला केश, काना मदरा, भगवाँ भैस। मार-मार काली-पुत्र। बारह कोस की मार, भूताँ हात कलेजी खूँहा गेडिया। जहाँ जाऊँ भैरुँ साथ। बारह कोस की रिद्धि ल्यावो। चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो। सूती होय, तो जगाय ल्यावो। बैठा होय, तो उठाय ल्यावो। अनन्त केसर की भारी ल्यावो। गौरा-पार्वती की विछिया ल्यावो। गेल्याँ की रस्तान मोह, कुवे की पणिहारी मोह, बैठा बाणिया मोह, घर बैठी बणियानी मोह, राजा की रजवाड़ मोह, महिला बैठी रानी मोह। डाकिनी को, शाकिनी को, भूतनी को, पलीतनी को, ओपरी को, पराई को, लाग कूँ, लपट कूँ, धूम कूँ, धक्का कूँ, पलीया कूँ, चौड़ कूँ, चौगट कूँ, काचा कूँ, कलवा कूँ, भूत कूँ, पलीत कूँ, जिन कूँ, राक्षस कूँ, बरियों से बरी कर दे। नजराँ जड़ दे ताला, इत्ता भैरव नहीं करे, तो पिता महादेव की जटा तोड़ तागड़ी करे, माता पार्वती का चीर फाड़ लँगोट करे। चल डाकिनी, शाकिनी, चौड़ूँ मैला बाकरा, देस्युँ मद की धार, भरी सभा में हूँ आने में कहाँ लगाई बार ? खप्पर में खाय, मसान में लौटे, ऐसे काला भैरुँ की कूण पूजा मेटे। राजा मेटे राज से जाय, प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय, जोगी मेटे ध्यान से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा, चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।”

विधि:- उक्त मन्त्र का अनुष्ठान रविवार से प्रारम्भ करें। एक पत्थर का तीन कोनेवाला टुकड़ा लिकर उसे अपने सामने स्थापित करें। उसके ऊपर तेल और सिन्दूर का लेप करें। पान और नारियल भेंट में चढ़ावें। वहाँ नित्य सरसों के तेल का दीपक जलावें। अच्छा होगा कि दीपक अखण्ड हो। मन्त्र को नित्य २१ बार ४१ दिन तक जपें। जप के बाद नित्य छार, छरीला, कपूर, केशर और लौंग की आहुति दें। भोग में बाकला, बाटी बाकला रखें (विकल्प में उड़द के पकोड़े, बेसन के लड्डू और गुड़-मिले दूध की बलि दें। मन्त्र में वर्णित सब कार्यों में यह मन्त्र काम करता है।

□□□□ □□□□□□ □□□□□□

भैरव वशीकरण मन्त्र

१. “ॐ नमो रुद्राय, कपिलाय, भैरवाय, त्रिलोक-नाथाय, ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।”

विधि:- सर्व-प्रथम किसी रविवार को गुग्गुलु, धूप, दीपक सहित उपर्युक्त मन्त्र का पन्द्रह हजार जप कर उसे सिद्ध करे। फिर आवश्यकतानुसार इस मन्त्र का १०८ बार जप कर एक लौंग को अभिमन्त्रित लौंग को, जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिलाए।

२. “ॐ नमो काला गौरा भैरुं वीर, पर-नारी सूनू देही सीर। गुड़ परिदीयी गोरख जाणी, गुद्दी पकड़ दे भैरु आणी, गुड़, रक्त का धरि ग्रास, कदे न छोड़े मेरा पाश। जीवत सवै देवरो, मूआ सेवै मसाण। पकड़ पलना ल्यावे। काला भैरु न लावै, तो अक्षर देवी कालिका की आण। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।”

विधि:- २१,००० जप। आवश्यकता पड़ने पर २१ बार गुड़ को अभिमन्त्रित कर साध्य को खिलाए।

३. “ॐ भ्रां भ्रां भूँ भैरवाय स्वाहा। ॐ भं भं भं अमुक-मोहनाय स्वाहा।”

विधि:- उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर पीपल के पत्ते को अभिमन्त्रित करे। फिर मन्त्र को उस पत्ते पर लिखकर,

जिसका वशीकरण करना हो, उसके घर में फेंक देवे। या घर के पिछवाड़े गाड़ दे। यही क्रिया 'छितवन' या 'फुरहठ' के पत्ते द्वारा भी हो सकती है।

॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥

यह पोस्ट [पूर्व](#) में भी प्रकाशित हो चुकी है। पाठकों के अनुरोध पर परिवर्धित सामग्री के साथ इसे पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥

१. बच्चे ने दूध पीना या खाना छोड़ दिया हो, तो रोटी या दूध को बच्चे पर से '॥॥' बार उतार के कुत्ते या गाय को खिला दें।
२. नमक, राई के दाने, पीली सरसों, मिर्च, पुरानी झाड़ू का एक टुकड़ा लेकर 'नजर' लगे व्यक्ति पर से 'आठ' बार उतार कर अग्नि में जला दें। '॥॥॥' लगी होगी, तो मिर्चों की धांस नहीं आयेगी।
३. जिस व्यक्ति पर शंका हो, उसे बुलाकर '॥॥॥' लगे व्यक्ति पर उससे हाथ फिरवाने से लाभ होता है।
४. पश्चिमी देशों में नजर लगने की आशंका के चलते '॥॥ ॥॥॥' कहकर लकड़ी के फर्नीचर को छू लेता है। ऐसी मान्यता है कि उसे नजर नहीं लगेगी।
५. गिरजाघर से पवित्र-जल लाकर पिलाने का भी चलन है।
६. इस्लाम धर्म के अनुसार 'नजर' वाले पर से '॥॥॥॥॥' या '॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥' उतार के 'बीच चौराहे' पर रख दें। दरगाह या कब्र से फूल और अगर-बत्ती की राख लाकर 'नजर' वाले के सिरहाने रख दें या खिला दें।
७. एक लोटे में पानी लेकर उसमें नमक, खड़ी लाल मिर्च डालकर आठ बार उतारे। फिर थाली में दो आकृतियाँ- एक काजल से, दूसरी कुमकुम से बनाए। लोटे का पानी थाली में डाल दें। एक लम्बी काली या लाल रङ्ग की बिन्दी लेकर उसे तेल में भिगोकर 'नजर' वाले पर उतार कर उसका एक कोना चिमटे या सँडसी से पकड़ कर नीचे से जला दें। उसे थाली के बीचो-बीच ऊपर रखें। गरम-गरम काला तेल पानी वाली थाली में गिरेगा। यदि नजर लगी होगी तो, छन-छन आवाज आएगी, अन्यथा नहीं।
८. एक नींबू लेकर आठ बार उतार कर काट कर फेंक दें।
९. चाकू से जमीन पे एक आकृति बनाए। फिर चाकू से 'नजर' वाले व्यक्ति पर से एक-एक कर आठ बार उतारता जाए और आठों बार जमीन पर बनी आकृति को काटता जाए।
१०. गो-मूत्र पानी में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाए और उसके आस-पास पानी में मिलाकर छिड़क दें। यदि स्नान करना हो तो थोड़ा स्नान के पानी में भी डाल दें।
११. थोड़ी सी राई, नमक, आटा या चोकर और ३, ५ या ७ लाल सूखी मिर्च लेकर, जिसे 'नजर' लगी हो, उसके सिर पर सात बार घुमाकर आग में डाल दें। 'नजर'-दोष होने पर मिर्च जलने की गन्ध नहीं आती।
१२. पुराने कपड़े की सात चिन्दियाँ लेकर, सिर पर सात बार घुमाकर आग में जलाने से 'नजर' उतर जाती है।
१३. झाड़ू को चूल्हे / गैस की आग में जला कर, चूल्हे / गैस की तरफ पीठ कर के, बच्चे की माता इस जलती झाड़ू को ७ बार इस तरह स्पर्श कराए कि आग की तपन बच्चे को न लगे। तत्पश्चात् झाड़ू को अपनी टाँगों के बीच से निकाल कर बगैर देखे ही, चूल्हे की तरफ फेंक दें। कुछ समय तक झाड़ू को वहीं पड़ी रहने दें। बच्चे को लगी नजर दूर हो जायेगी।
१४. नमक की डली, काला कोयला, डंडी वाली ७ लाल मिर्च, राई के दाने तथा फिटकरी की डली को बच्चे या बड़े पर से ७ बार उबार कर, आग में डालने से सबकी नजर दूर हो जाती है।
१५. फिटकरी की डली को, ७ बार बच्चे/बड़े/पशु पर से ७ बार उबार कर आग में डालने से नजर तो दूर होती ही है, नजर लगाने वाले की धुंधली-सी शक्ल भी फिटकरी की डली पर आ जाती है।
१६. तेल की बत्ती जला कर, बच्चे/बड़े/पशु पर से ७ बार उबार कर दोहाई बोलते हुए दीवार पर चिपका दें। यदि नजर लगी होगी तो तेल की बत्ती भभक-भभक कर जलेगी। नजर न लगी होने पर शांत हो कर जलेगी।
१७. "॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥। ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥, ॥॥॥॥ ॥॥-॥॥॥ ॥ ॥॥॥॥। ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥-॥॥॥॥। ॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ? ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥॥ ? ॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ? ॥॥॥॥ ॥॥॥ ? ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ? ॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥ ? ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥, ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ? ॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥, ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥। ॥॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥, ॥॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥।

विधि- मन्त्र पढ़ते हुए मोर-पंख से व्यक्ति को सिर से पैर तक झाड़ दें।

[illegible]

၃၀။ “ငါ့ ဂုဏ် ဂုဏ်တို့ ဂုဏ်တို့ ဂုဏ်တို့တို့တို့တို့တို့တို့, ဂုဏ်တို့ ဂုဏ်တို့တို့တို့-ဂုဏ်တို့တို့တို့
ဂုဏ်တို့တို့! ဂုဏ်-ဂုဏ်တို့, ဂုဏ်တို့-ဂုဏ်တို့, ဂုဏ်တို့-ဂုဏ်တို့-ဂုဏ်တို့ ဂုဏ်တို့, ဂုဏ်-ဂုဏ်-
ဂုဏ်တို့, ဂုဏ်တို့ ဂုဏ်တို့, ဂုဏ်တို့ ဂုဏ်တို့ ဂုဏ်တို့တို့!”

[illegible]

२२०. डाइन या नजर झाडने का मन्त्र

विधि- किसी को नजर लग गई हो या किसी डाइन ने कुछ कर दिया हो, उस समय वह किसी को पहचानता नहीं है। उस समय उसकी हालत पागल-जैसी हो जाती है। ऐसे समय उक्त मन्त्र को नौ बार हाथ में 'जल' लेकर पढ़े। फिर उस जल से छिंटा मारे तथा रोगी को पिलाए। रोगी ठीक हो जाएगा। यह स्वयं-सिद्ध मन्त्र है, केवल माँ पर विश्वास की आवश्यकता है।

[illegible]

विधि- उक्त मन्त्र से ११ बार झारे, तो बालकों को लगी नजर या टोना का दोष दूर होता है।

“你個 蠢蛋，你個 蠢蛋，你個 蠢蛋！ 你 你 你 蠢蛋 蠢蛋， 蠢蛋 你 你 蠢蛋！ 你個 蠢蛋 你 蠢蛋，你個 蠢蛋 你 蠢蛋！ 你個 蠢蛋 蠢蛋 蠢蛋 蠢蛋 蠢蛋 你，你個 蠢蛋 你！ 你個 蠢蛋 蠢蛋- 蠢蛋 你，你 蠢蛋 你 蠢蛋！”

[illegible]

“මමගේ මමගේ, මමගේ මමගේ, මමගේ මමගේ, මමගේ මමගේ මමගේ මමගේ, මම මම
මමගේ, මමගේ මම මමගේ මමගේ! මමගේ මම මමගේ මම මමගේ! මමගේ මම මම මමගේ,
මම මමගේ, මමගේ මමගේ! මම මම මම-මම මමගේ මම මමගේ මමගේ මම! මමගේ
මමගේ මමගේමම ම, මමගේ මමගේම ම, මමගේ මමගේම මම මම මමගේ-මම-
මමගේමම-මමගේමමම ම”

नोट :- नजर उतारते समय, सभी प्रयोगों में ऐसा बोलना आवश्यक है कि “इसको बच्चे की, बूढ़े की, स्त्री की, पुरुष की, पशु-पक्षी की, हिन्दू या मुसलमान की, घर वाले की या बाहर वाले की, जिसकी नजर लगी हो, वह इस बत्ती, नमक, राई, कोयले आदि सामान में आ जाए तथा नजर का सताया बच्चा-बूढ़ा ठीक हो जाए। सामग्री आग या बत्ती जला दूंगी या जला दूंगा।”

“उत्तर काल, काल । सुन जोगी का बाप । इस्माइल जोगी की दो बेटों-एक माथे चूहा, एक काते फूला । दूहाई लोना चमारी की । एक शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा”

“ओम् गुरुभ्यो नमः । देव-देव । पूरा दिशा भेरुनाथ-दल । क्षमा भरो, विशाहरो वैर, बिन आज्ञा । राजा बासुकी की आन. हाथ वेग चलाव ।”

विधि:- किसी पर्वकाल में एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर २१ बार पानी को अभिमन्त्रित कर रोगी को पिलावें, तो दाद रोग जाता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□□□□□□-□□□□

“000000-000000 0000 00,000000 00 000 00000! 0000 000000 000000,0000 00 0000000 0000! 000000 0000000000 0000 00,0000-0000 0000-0000000! 000-000-000000 000,0000 0000000-0000000-0000000!! 0000 0000 00 00,00-0000 00 0000 000! 0 000 00000000000 00 00 00 00 00 00 00 00 00000 000000 000000 0000 000000!!”

□ □ □ □ □ □ □ □

सभा मोहन

नवरात्रोत्सव का दीपक प्रज्वलित रखते हुए अगार-बत्ती जलाकर प्रातः-सायं उक्त

“ॐ नमो भैरुनाथ, काली का पुत्र! हाजिर होके, तुम मेरा कारज करो तुरत। कमर बिराज मस्तङ्गा लँगोट, घूँघर-माल। हाथ बिराज डमरु खप्पर त्रिशूल। मस्तक बिराज तिलक सिन्दूर। शीश बिराज जटा-जूट, गल बिराज नोद जनेऊ। ॐ नमो भैरुनाथ, काली का पुत्र! हाजिर होके तुम मेरा कारज करो तुरत। नित उठ करो आदेश-आदेश।”

विधि- नवरात्रों में प्रतिपदा से नवमी तक घृत का दीपक प्रज्वलित रखते हुए अगार-बत्ती जलाकर प्रातः-सायं उक्त मन्त्र का ४०-४० जप करे। कम या ज्यादा न करे। जगदम्बा के दर्शन होते हैं।

शीघ्र धन प्राप्ति के लिए

“ॐ नमः कर घोर-रूपिणि स्वाहा”

विधि: उक्त मन्त्र का जप प्रातः ११ माला देवी के किसी सिद्ध स्थान या नित्य पूजन स्थान पर करे। रात्रि में १०८ मिट्टी के दाने लेकर किसी कुएँ पर तथा सिद्ध-स्थान या नित्य-पूजन-स्थान की तरफ मुख करके दायें पैर कुएँ में लटकाकर व बाँयें पैर को दाएँ पैर पर रखकर बैठे। प्रति-जप के साथ एक-एक करके १०८ मिट्टी के दाने कुएँ में डाले। ग़तारह दिन तक इसी प्रकार करे। यह प्रयोग शीघ्र आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए है।

श्री भैरव मन्त्र

श्री भैरव मन्त्र

“ॐ नमो भैरुनाथ, काली का पुत्र! हाजिर होके, तुम मेरा कारज करो तुरत। कमर बिराज मस्तङ्गा लँगोट, घूँघर-माल। हाथ बिराज डमरु खप्पर त्रिशूल। मस्तक बिराज तिलक सिन्दूर। शीश बिराज जटा-जूट, गल बिराज नोद जनेऊ। ॐ नमो भैरुनाथ, काली का पुत्र! हाजिर होके तुम मेरा कारज करो तुरत। नित उठ करो आदेश-आदेश।”

विधि: पञ्चोपचार से पूजन। रविवार से शुरु करके २१ दिन तक मृत्तिका की मणियों की माला से नित्य अट्ठाइस (२८) जप करे। भोग में गुड़ व तेल का शीरा तथा उड़द का दही-बड़ा चढ़ाए और पूजा-जप के बाद उसे काले श्वान को खिलाए। यह प्रयोग किसी अटके हुए कार्य में सफलता प्राप्ति हेतु है।

bhoot badha niwark

these mantras are send by ‘muni’ santosh kumar

1-om nam: shivay rudray mata chandi mam raksha kuru kuru swaha

2-guru niranjan mai tera chela raat biraat firun akela

jahaan tak baaje meri taali,

bhoot pret danw ka dew ka chudail ka keen karaae gali ghaat ka

kuaan ka panghat ka inka sabka maarkoot ke bhaga ke na aawash to kaali ka

sachcha poot bhairaw na kahawas

.....
oopar ke dono mantr bhoot badha niwark hain
“Muni” Santosh kumar “pyasa”

□□□□-□□□□□□-□□□□□□-□□□□□□

□□ □□□□□□ □□□□□-□□□□ □□□□□□

“ॐ गर्जन्तां घोरन्तां, इतनी छिन कहाँ लगाई ? साँझ क वेला, लौंग-सुपारी-पान-फूल-इलायची-धूप-दीप-रोटलँगोट-फल-फलाहार मो पै माँगै । अञ्जनी-पुत्र प्रताप-रक्षा-कारण वेगि चलो । लोहे की गदा कील, चं चं गटका चक कील, बावन भैरो कील, मरी कील, मसान कील, प्रेत-ब्रह्म-राक्षस कील, दानव कील, नाग कील, साढ़ बारह ताप कील, तिजारी कील, छल कील, छिद कील, डाकनी कील, साकनी कील, दुष्ट कील, मुष्ट कील, तन कील, काल-भैरो कील, मन्त्र कील, कामरु देश के दोनों दरवाजा कील, बावन वीर कील, चौंसठ जोगिनी कील, मारते क हाथ कील, देखते क नयन कील, बोलते क जिह्वा कील, स्वर्ग कील, पाताल कील, पृथ्वी कील, तारा कील, कील बे कील, नहीं तो अञ्जनी माई की दोहाई फिरती रहे । जो करै वज्र की घात, उलटे वज्र उसी पै परै । छात फार के मरै । ॐ खं-खं-खं जं-जं-जं वं-वं-वं रं-रं-रं लं-लं-लं टं-टं-टं मं-मं-मं । महा रुद्राय नमः । अञ्जनी-पुत्राय नमः । हनुमताय नमः । वायु-पुत्राय नमः । राम-दूताय नमः । ”

□□□□□- अत्यन्त लाभ-दायक अनुभूत मन्त्र है । १००० पाठ करने से सिद्ध होता है । अधिक कष्ट हो, तो हनुमानजी का फोटो टाँगकर, ध्यान लगाकर लाल फूल और गुग्गूल की आहुति दें । लाल लँगोट, फल, मिठाई, ५ लौंग, ५ इलायची, १ सुपारी चढ़ा कर पाठ करें ।

□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□

“ॐ गुरुजी, सत नमः आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐकारे शिव-रूपी, मध्याह्ने हंस-रूपी, सन्ध्यायां साधु-रूपी । हंस, परमहंस दो अक्षर । गुरु तो गोरक्ष, काया तो गायत्री । ॐ ब्रह्म, सोऽहं शक्ति, शून्य माता, अवगत पिता, विहंगम जात, अभय पन्थ, सूक्ष्म-वेद, असंख्य शाखा, अनन्त प्रवर, निरञ्जन गोत्र, त्रिकुटी क्षेत्र, जुगति जोग, जल-स्वरूप रुद्र-वर्ण । सर्व-देव ध्यायते । आए श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथ । ॐ सोऽहं तत्पुरुषाय विद्महे शिव गोरक्षाय धीमहि तन्नो गोरक्षः प्रचोदयात् । ॐ इतना गोरख-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया । गंगा गोदावरी त्र्यम्बक-क्षेत्र कोलाञ्चल अनुपान शिला पर सिद्धासन बैठ । नव-नाथ, चौरासी सिद्ध, अनन्त-कोटि-सिद्ध-मध्ये श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथजी कथ पढ़, जप के सुनाया । सिद्धो गुरुवरो, आदेश-आदेश । । ”

साधन-विधि एवं प्रयोग:-

प्रतिदिन गोरखनाथ जी की प्रतिमा का पंचोपचार से पूजनकर २१, २७, ५१ या १०८ जप करें । नित्य जप से भगवान् गोरखनाथ की कृपा मिलती है, जिससे साधक और उसका परिवार सदा सुखी रहता है । बाधाएँ स्वतः दूर हो जाती हैं । सुख-सम्पत्ति में वृद्धि होती है और अन्त में परम पद प्राप्त होता है ।

□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

“ॐ ह्रीं श्रीं चामुण्डा सिंह-वाहिनी । बीस-हस्ती भगवती, रत्न-मण्डित सोनन की माल । उत्तर-पथ में आप बैठी, हाथ सिद्ध वाचा ऋद्धि-सिद्धि । धन-धान्य देहि देहि, कुरु कुरु स्वाहा । ”

विधि:- उक्त मन्त्र का सवा लाख जप कर सिद्ध कर लें । फिर आवश्यकतानुसार श्रद्धा से एक माला जप करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं । लक्ष्मी प्राप्त होती है, नौकरी में उन्नति और व्यवसाय में वृद्धि होती है ।

□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□

“विष्णु-प्रिया लक्ष्मी, शिव-प्रिया सती से प्रकट हुई । कामाक्षा भगवती आदि-शक्ति, युगल मूर्ति अपार, दोनों की प्रीति अमर, जाने संसार । दुहाई कामाक्षा की । आय बढ़ा व्यय घटा । दया कर माई । ॐ नमः विष्णु-प्रियाय । ॐ नमः शिव-प्रियाय । ॐ नमः कामाक्षाय । ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा । ”

विधि:- धूप-दीप-नैवेद्य से पूजा कर सवा लक्ष जप करें। लक्ष्मी आगमन एवं चमत्कार प्रत्यक्ष दिखाई देगा। रुके कार्य होंगे। लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

“ॐ गुरुजी, सत नमः आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐकारे शिव-रूपी, मध्याह्ने हंस-रूपी, सन्ध्यायां साधु-रूपी। हंस, परमहंस दो अक्षर। गुरु तो गोरक्ष, काया तो गायत्री। ॐ ब्रह्म, सोऽहं शक्ति, शून्य माता, अवगत पिता, विहंगम जात, अभय पन्थ, सूक्ष्म-वेद, असंख्य शाखा, अनन्त प्रवर, निरञ्जन गोत्र, त्रिकुटी क्षेत्र, जुगति जोग, जल-स्वरूप रुद्र-वर्ण। सर्व-देव ध्यायते। आए श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथ। ॐ सोऽहं तत्पुरुषाय विद्महे शिव गोरक्षाय धीमहि तन्नो गोरक्षः प्रचोदयात्। ॐ इतना गोरख-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक-क्षेत्र कोलाञ्चल अनुपान शिला पर सिद्धासन बैठ। नव-नाथ, चौरासी सिद्ध, अनन्त-कोटि-सिद्ध-मध्ये श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथजी कथ पढ़, जप के सुनाया। सिद्धो गुरुवरो, आदेश-आदेश।।”

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

१०. “बारा राखौ, बरैनी, मूँह म राखौ कालिका। चण्डी म राखौ मोहिनी, भुजा म राखौ जोहनी। आगू म राखौ सिलेमान, पाछे म राखौ जमादार। जाँघे म राखौ लोहा के झार, पिण्डरी म राखौ सोखन वीर। उल्टन काया, पुल्टन वीर, हाँक देत हनुमन्ता छुटे। राजा राम के परे दोहाई, हनुमान के पीड़ा चौकी। कीर करे बीट बिरा करे, मोहिनी-जोहिनी सातों बहिनी। मोह देबे जोह देबे, चलत म परिहारिन मोहों। मोहों बन के हाथी, बत्तीस मन्दिर के दरबार मोहों। हाँक परे भिरहा मोहिनी के जाय, चेत सम्हार के। सत गुरु साहेब।”

विधि- उक्त मन्त्र स्वयं सिद्ध है तथा एक सज्जन के द्वारा अनुभूत बतलाया गया है। फिर भी शुभ समय में १०८ बार जपने से विशेष फलदायी होता है। नारियल, नींबू, अगर-बत्ती, सिन्दूर और गुड़ का भोग लगाकर १०८ बार मन्त्र जपे।

मन्त्र का प्रयोग कोर्ट-कचहरी, मुकदमा-विवाद, आपसी कलह, शत्रु-वशीकरण, नौकरी-इण्टरव्यू, उच्च अधिकारियों से सम्पर्क करते समय करे। उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए इस प्रकार जाएँ कि मन्त्र की समाप्ति ठीक इच्छित व्यक्ति के सामने हो।

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

“ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं वाराह-दन्ताय भैरवाय नमः।”

विधि- ‘शूकर-दन्त’ को अपने सामने रखकर उक्त मन्त्र का होली, दीपावली, दशहरा आदि में १०८ बार जप करे। फिर इसका ताबीज बनाकर गले में पहन लें। ताबीज धारण करने वाले पर जादू-टोना, भूत-प्रेत का प्रभाव नहीं होगा। लोगों का वशीकरण होगा। मुकदमें में विजय प्राप्ति होगी। रोगी ठीक होने लगेगा। चिन्ताएँ दूर होंगी और शत्रु परास्त होंगे। व्यापार में वृद्धि होगी।

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

“हथेली में हनुमन्त बसे, भैरु बसे कपार।

नरसिंह की मोहिनी, मोहे सब संसार।

मोहन रे मोहन्ता वीर, सब वीरन में तेरा सीर।

सबकी नजर बाँध दे, तेल सिन्दूर चढ़ाऊँ तुझे।

तेल सिन्दूर कहाँ से आया ? कैलास-पर्वत से आया।

कौन लाया, अञ्जनी का हनुमन्त, गौरी का गणेश लाया।

काला, गोरा, तोतला-तीनों बसे कपार।

बिन्दा तेल सिन्दूर का, दुश्मन गया पाताल ।
 दुहाई कमिया सिन्दूर की, हमें देख शीतल हो जाए ।
 सत्य नाम, आदेश गुरु की । सत् गुरु, सत् कबीर ।
 विधि- आसाम के 'काम-रूप कामाख्या, क्षेत्र में 'कामीया-सिन्दूर' पाया जाता है । इसे प्राप्त कर लगातार सात
 रविवार तक उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें । इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा । प्रयोग के समय 'कामीया सिन्दूर'
 पर ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अपने माथे पर टीका लगाए । 'टीका' लगाकर जहाँ जाएँगे, सभी वशीभूत होंगे ।

ॐ नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्रत्र-किरणाय ऐं अतुल-बल-पराक्रमाय नव-ग्रह-दश-दिक्-पाल-लक्ष्मी-देव-वाय,

धर्म-कर्म-सहितायै 'अमुक' नाथय नाथय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, दासानुदासं कुरु-कुरु, वश कुरु-कुरु
 स्वाहा । ”

विधि- सूर्यदेव का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का १०८ बार जप प्रतिदिन ९ दिन तक करने से 'आकर्षण' का कार्य
 सफल होता है ।

२. “ऐं पिन्स्थां क्लीं काम-पिशाचिनी शिघ्रं 'अमुक' ग्राह्य ग्राह्य, कामेन मम रूपेण वशैः विदारय विदारय, द्रावय
 द्रावय, प्रेम-पाशे बन्धय बन्धय, ॐ श्रीं फट् । ”

विधि- उक्त मन्त्र को पहले पर्व, शुभ समय में २०००० जप कर सिद्ध कर लें । प्रयोग के समय 'साध्य' के नाम
 का स्मरण करते हुए प्रतिदिन १०८ बार मन्त्र जपने से 'वशीकरण' हो जाता है ।

ॐ पीर बजरङ्गी, राम लक्ष्मण के सङ्गी । जहाँ-जहाँ जाए, फतह के डङ्के बजाय । 'अमुक' को मोह के, मेरे पास न

लाए, तो अञ्जनी का पूत न कहाय । दुहाई राम-जानकी की । ”

विधि- ११ दिनों तक ११ माला उक्त मन्त्र का जप कर इसे सिद्ध कर ले । 'राम-नवमी' या 'हनुमान-जयन्ती' शुभ
 दिन है । प्रयोग के समय दूध या दूध निर्मित पदार्थ पर ११ बार मन्त्र पढ़कर खिला या पिला देने से, वशीकरण
 होगा ।

ॐ अमुक-नाम्ना ॐ नमो वायु-सूनुवे झटिति आकर्षय-आकर्षय स्वाहा । ”

विधि- केसर, कस्तुरी, गोरोचन, रक्त-चन्दन, श्वेत-चन्दन, अम्बर, कर्पूर और तुलसी की जड़ को घिस या पीसकर
 स्याही बनाए । उससे द्वादश-दल-कलम जैसा 'यन्त्र' लिखकर उसके मध्य में, जहाँ पराग रहता है, उक्त मन्त्र को
 लिखे । 'अमुक' के स्थान पर 'साध्य' का नाम लिखे । बारह दलों में क्रमशः निम्न मन्त्र लिखे- १. हनुमते नमः, २.
 अञ्जनी-सूनुवे नमः, ३. वायु-पुत्राय नमः, ४. महा-बलाय नमः, ५. श्रीरामेष्टाय नमः, ६. फाल्गुन-सखाय नमः, ७.
 पिङ्गाक्षाय नमः, ८. अमित-विक्रमाय नमः, ९. उदधि-क्रमणाय नमः, १०. सीता-शोक-विनाशकाय नमः, ११.
 लक्ष्मण-प्राण-दाय नमः और १२. दश-मुख-दर्प-हराय नमः ।

यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा करके षोडशोपचार पूजन करते हुए उक्त मन्त्र का ११००० जप करें । ब्रह्मचर्य का पालन
 करते हुए लाल चन्दन या तुलसी की माला से जप करें । आकर्षण हेतु अति प्रभावकारी है ।

ॐ नमः काम-देवाय । सहकल सहद्रश सहमसह लिए वन्हे धुनन जनममदर्शनं उत्कण्ठितं कुरु कुरु, दक्ष दक्षु-धर

कुसुम-वाणेन हन हन स्वाहा । ”

विधि- कामदेव के उक्त मन्त्र को तीनों काल, एक-एक माला, एक मास तक जपे, तो सिद्ध हो जायेगा । प्रयोग करते
 समय जिसे देखकर जप करेंगे, वही वश में होगा ।

ग्रह-बाधा-शान्ति मन्त्र

“ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दह दह । ”

विधि- सोम-प्रदोष से ७ दिन तक, माल-पुआ व कस्तुरी से उक्त मन्त्र से १०८ आहुतियाँ दें । इससे सभी प्रकार की
 ग्रह-बाधाएँ नष्ट होती हैं ।

□□□-□□□□-□□□□□□-□□□□□□

देव-बाधा-शान्ति-मन्त्र

“ॐ सर्वेश्वराय हुम् ।”

विधि- सोमवार से प्रारम्भ कर नौ दिन तक उक्त मन्त्र का ३ माला जप करें। बाद में घृत और काले तिल से आहुति दे। इससे दैवी बाधाएँ दूर होती हैं और सुख-शान्ति प्राप्ति होती है।

□□□□-□□□□-□□□□□□□ □□□□□□-□□□□□ □□□□□□□□□□

“सिद्ध वशीकरण मन्त्र” पोस्ट पर एक सज्जन की टिप्पणी प्राप्त हुई, pandit ji main , apni problem ka hal chahta hun . mera ek ladki ke saath affir tha , lekin kisi vaje se tut gaya maine use manane ki bahut koshish ki lekin wo mani nai . main us se pyaar karta hun aur chahta hun ki wo bhi mujhe pyaar kare .is liye main use vash mein karna chahta hun . pls mujhe koi upaye bataye. main bahut preshaan hun , pls mujhe help ki jiye .

रंजन पाराशर जी को ईमेल किया तो सर्विस प्रोवाइडर ने इनवेलिड करार दिया। फिर सोचा सर्वजनहिताय ऐसे समाधान को प्रकाशित किया जाये। सो-

विरह-ज्वर-विनाशकं ब्रह्म-शक्ति स्तोत्रम्

।। श्रीशिवोवाच ।।

ब्राह्मि ब्रह्म-स्वरूपे त्वं, मां प्रसीद सनातनि ! परमात्म-स्वरूपे च, परमानन्द-रूपिणि ! ।।

ॐ प्रकृत्यै नमो भद्रे, मां प्रसीद भवार्णवे । सर्व-मंगल-रूपे च, प्रसीद सर्व-मंगले ! ।।

विजये शिवदे देवि ! मां प्रसीद जय-प्रदे । वेद-वेदांग-रूपे च, वेद-मातः ! प्रसीद मे ।।

शोकघ्ने ज्ञान-रूपे च, प्रसीद भक्त वत्सले । सर्व-सम्पत्-प्रदे माये, प्रसीद जगदम्बिके ! ।।

लक्ष्मीनारायण-क्रोडे, स्त्रष्टुर्वक्षसि भारती । मम क्रोडे महा-माया, विष्णु-माये प्रसीद मे ।।

काल-रूपे कार्य-रूपे, प्रसीद दीन-वत्सले । कृष्णस्य राधिके भद्रे, प्रसीद कृष्ण पूजिते ! ।।

समस्त-कामिनीरूपे, कलांशेन प्रसीद मे । सर्व-सम्पत्-स्वरूपे त्वं, प्रसीद सम्पदां प्रदे ! ।।

यशस्विभिः पूजिते त्वं, प्रसीद यशसां निधेः । चराचर-स्वरूपे च, प्रसीद मम मा चिरम् ।।

मम योग-प्रदे देवि ! प्रसीद सिद्ध-योगिनि । सर्वसिद्धिस्वरूपे च, प्रसीद सिद्धिदायिनि ।।

अधुना रक्ष मामीशे, प्रदधं विरहाग्निना । स्वात्म-दर्शन-पुण्येन, क्रीणीहि परमेश्वरि ! ।।

।। फल-श्रुति ।।

एतत् पठेच्छृणुयाच्चन, वियोग-ज्वरो भवेत् । न भवेत् कामिनीभेदस्तस्य जन्मनि जन्मनि ।।

इस स्तोत्र का पाठ करने अथवा सुनने वाले को वियोग-पीड़ा नहीं होती और जन्म-जन्मान्तर तक कामिनी-भेद नहीं होता ।

विधि – पारिवारिक कलह, रोग या अकाल-मृत्यु आदि की सम्भावना होने पर इसका पाठ करना चाहिये । प्रणय सम्बन्धों में बाधाएँ आने पर भी इसका पाठ अभीष्ट फलदायक होगा ।

अपनी इष्ट-देवता या भगवती गौरी का विविध उपचारों से पूजन करके उक्त स्तोत्र का पाठ करें । अभीष्ट-प्राप्ति के लिये कातरता, समर्पण आवश्यक है।

□□□-□□□□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□□□ □□□□□□

ॐ-ॐॐॐॐॐ ॐ ॐॐॐॐॐ-ॐॐॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐ

“मां भयात् सर्वतो रक्ष, श्रियं वर्धय सर्वदा । शरीरारोग्यं मे देहि, देव-देव नमोऽस्तु ते ।।”

विधि- ‘दीपावली’ की रात्री या ‘ग्रहण’ के समय उक्त मन्त्र का जितना हो सके, उतना जप करे । कम से कम १० माला जप करे । बाद में एक बर्तन में स्वच्छ जल भरे । जल के ऊपर हाथ रखकर उक्त मन्त्र का ७ या २७ बार जप करे । फिर जप से अभिमन्त्रित जल को रोगी को पिलाए । इस तरह प्रतिदिन करने से रोगी रोग मुक्त हो जाता है । जप विश्वास और शुभ संकल्प-बद्ध होकर करें ।

ॐॐ ॐ ॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐ-

“ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षिय मामृतात्

स्वः भूर्भुवः सः जूं ॐ हौं ॐ ।।”

विधि- शुक्ल पक्ष में सोमवार को रात्रि में सवा नौ बजे के पश्चात् शिवालय में भगवान् शिव का सवा पाव दूध से दुग्धाभिषेक करें । तदुपरान्त उक्त मन्त्र की एक माला जप करें । इसके बाद प्रत्येक सोमवार को उक्त प्रक्रिया दोहराये तथा दो मुखी रुद्राक्ष को काले धागे में पिरोकर गले में धारण करने से शीघ्र फल प्राप्त होगा ।

ॐॐ ॐॐॐॐॐॐॐॐ ॐॐॐ ॐॐॐ ॐ ॐॐॐॐॐ

“ॐ नमो महा-विनायकाय अमृतं रक्ष रक्ष, मम फलसिद्धिं देहि, रुद्र-वचनेन स्वाहा”

किसी भी रोग में औषधि को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लें, तब सेवन करें । औषधि शीघ्र एवं पूर्ण लाभ करेगी ।

ॐॐॐ-ॐॐॐॐॐॐ

सुख-शान्ति

१०. कामाक्षा-मन्त्र

“ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा ।।”

विधि- उक्त मन्त्र का किसी दिन १०८ बार जप कर, ११ बार हवन करें । फिर नित्य एक बार जप करें । इससे सभी प्रकार की सुख-शान्ति होगी ।

ॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐ ॐॐॐॐॐ-ॐॐॐ ॐॐॐ ॐॐॐॐॐ

इच्छित कार्य में सफलता-दायक शाबर मन्त्र

“ॐ कामरु, कामाक्षा देवी, जहाँ बसे लक्ष्मी महारानी । आवे, घर में जमकर बैठे । सिद्ध होय, मेरा काज सुधारे । जो चाहूँ, सो होय । ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ।।”

विधि- उक्त मन्त्र का जप रात्रि-काल में करें । ग्यारह दिनों के जप के पश्चात् ११ नारियलों का हवन करे । इच्छित कार्य में सफलता मिलती है ।

ॐॐॐॐ-ॐॐॐॐॐ-ॐॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐॐॐ ॐॐॐॐॐॐ

सर्व-कार्य-सिद्धि जञ्जीरा मन्त्र

“या उस्ताद बैठो पास, काम आवै रास । ला इलाही लिल्ला हजरत वीर कौशलया वीर, आज मज रे जालिम शुभ करम दिन करै जञ्जीर । जञ्जीर से कौन-कौन चले? बावन वीर चलें, छप्पन कलवा चलें । चौंसठ योगिनी चलें, नब्बे

नारसिंह चलें। देव चलें, दानव चलें। पाँचों त्रिशेम चलें, लांगुरिया सलार चलें। भीम की गदा चले, हनुमान की हाँक चले। नाहर की धाक चलै, नहीं चलै, तो हजरत सुलेमान के तख्त की दुहाई है। एक लाख अस्सी हजार पीर व पैगम्बरों की दुहाई है। चलो मन्त्र, ईश्वर वाचा। गुरु का शब्द साँचा।”

विधि- उक्त मन्त्र का जप शुक्ल-पक्ष के सोमवार या मङ्गलवार से प्रारम्भ करे। कम-से-कम ५ बार नित्य करे। अथवा २१, ४१ या १०८ बार नित्य जप करे। ऐसा ४० दिन तक करे। ४० दिन के अनुष्ठान में मांस-मछली का प्रयोग न करे। जब ‘ग्रहण’ आए, तब मन्त्र का जप करे।

यह मन्त्र सभी कार्यों में काम आता है। भूत-प्रेत-बाधा हो अथवा शारीरिक-मानसिक कष्ट हो, तो उक्त मन्त्र ३ बार पढ़कर रोगी को पिलाए। मुकदमे में, यात्रा में-सभी कार्यों में इसके द्वारा सफलता मिलती है।

□□□□□-□□-□□□□□□□□ □□□□□□

अक्षय-धन-प्राप्ति मन्त्र

प्रार्थना

हे मां लक्ष्मी, शरण हम तुम्हारी।

पूरण करो अब माता कामना हमारी।।

धन की अधिष्ठात्री, जीवन-सुख-दात्री।

सुनो-सुनो अम्बे सत्-गुरु की पुकार।

शम्भु की पुकार, मां कामाक्षा की पुकार।।

तुम्हें विष्णु की आन, अब मत करो मान।

आशा लगाकर अम देते हैं दीप-दान।।

मन्त्र- “ॐ नमः विष्णु-प्रियायै, ॐ नमः कामाक्षायै। ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं श्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा।”

विधि- ‘दीपावली’ की सन्ध्या को पाँच मिट्टी के दीपकों में गाय का घी डालकर रुई की बत्ती जलाए। ‘लक्ष्मी जी’ को दीप-दान करें और ‘मां कामाक्षा’ का ध्यान कर उक्त प्रार्थना करे। मन्त्र का १०८ बार जप करे। ‘दीपक’ सारी रात जलाए रखे और स्वयं भी जागता रहे। नींद आने लगे, तो मन्त्र का जप करे। प्रातःकाल दीपों के बुझ जाने के बाद उन्हें नए वस्त्र में बाँधकर ‘तिजोरी’ या ‘बक्से’ में रखे। इससे श्रीलक्ष्मीजी का उसमें वास हो जाएगा और धन-प्राप्ति होगी। प्रतिदिन सन्ध्या समय दीप जलाए और पाँच बार उक्त मन्त्र का जप करे।

[« अक्षय-धन-प्राप्ति मन्त्र](#)

[शत्रु-नाशक प्रयोग-श्रीकृष्ण कीलक »](#)

□□□□□□-□□□□□□(Attraction-mantra)

सर्व-जन-आकर्षण-मन्त्र

१. “ॐ नमो आदि-रूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।”

विधि- १ लाख जप से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। ‘अमुकस्य’ के स्थान पर साध्य या साध्या का नाम जोड़े।

“आकर्षण” का अर्थ विशाल दृष्टि से लिया जाना चाहिए। सूझ-बूझ से उक्त मन्त्र का उपयोग करना चाहिए।

मान्त्र-सिद्धि के बाद प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग के समय अनामिका उँगली के रक्त से भोज-पत्र के ऊपर पूरा मन्त्र लिखना चाहिए। जिसका आकर्षण करना हो, उस व्यक्ति का नाम मन्त्र में जोड़ कर लिखें। फिर उस भोज-पत्र को शहद में डाले। बाद में भी मन्त्र का जप करते रहना चाहिए। कुछ ही दिनों में साध्य वशीभूत होगा।

२. “ॐ हुँ ॐ हुँ ह्रीं।”

३. “ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः।”

४. “ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः।”

विधि- उक्त मन्त्र में से किसी भी एक मन्त्र का जप करें। प्रतिदिन १० हजार जप करने से १५ दिनों में साधक की आकर्षण-शक्ति बढ़ जाती है। 'जप' के साध्य का ध्यान करना चाहिए।

ॐ श्रीकृष्ण कीलक मन्त्रः ॐ श्रीगोपिका-कीलकं परिकीर्तयामः ॐ

श्रीकृष्ण कीलक

ॐ गोपिका-वृन्द-मध्यस्थं, रास-क्रीडा-स-मण्डलम् ।

क्लम प्रसति केशालिं, भजेऽम्बुज-रुचि हरिम् । ।

विद्रावय महा-शत्रून्, जल-स्थल-गतान् प्रभो !

ममाभीष्ट-वरं देहि, श्रीमत्-कमल-लोचन ! । ।

भवाम्बुधेः पाहि पाहि, प्राण-नाथ, कृपा-कर !

हर त्वं सर्व-पापानि, वांछा-कल्प-तरोर्मम । ।

जले रक्ष स्थले रक्ष, रक्ष मां भव-सागरात् ।

कूष्माण्डान् भूत-गणान्, चूर्णय त्वं महा-भयम् । ।

शंख-स्वनेन शत्रूणां, हृदयानि विकम्पय ।

देहि देहि महा-भूति, सर्व-सम्पत्-करं परम् । ।

वंशी-मोहन-मायेश, गोपी-चित्त-प्रसादक !

ज्वरं दाहं मनो दाहं, बन्ध बन्धनजं भयम् । ।

निष्पीडय सद्यः सदा, गदा-धर गदाऽग्रजः !

इति श्रीगोपिका-कान्तं, कीलकं परि-कीर्तितम् ।

यः पठेत् निशि वा पंच, मनोऽभिलषितं भवेत् ।

सकृत् वा पंचवारं वा, यः पठेत् तु चतुष्पथे । ।

शत्रवः तस्य विच्छिन्नाः, स्थान-भ्रष्टा पलायिनः ।

दरिद्रा भिक्षुरूपेण, क्लिश्यन्ते नात्र संशयः । ।

ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा । ।

विशेष - एक बार माता पार्वती कृष्ण बनी तथा श्री शिवजी माँ राधा बने। उन्हीं पार्वती रूप कृष्ण की उपासना हेतु उक्त 'कृष्ण-कीलक' की रचना हुई।

यदि रात्रि में घर पर इसके 5 पाठ करें, तो मनोकामना पूरी होगी। दुष्ट लोग यदि दुःख देते हों, तो सूर्यास्त के बाद चैराहे पर एक या पाँच पाठ करे, तो शत्रु विच्छिन्न होकर दरिद्रता एवं व्याधि से पीड़ित होकर भाग जायेंगे।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ

कार्य-सिद्धि हेतु गणेश शाबर मन्त्र

“ॐ गनपत वीर, भूखे मसान, जो फल माँगूँ, सो फल आन। गनपत देखे, गनपत के छत्र से बादशाह डरे। राजा के मुख से प्रजा डरे, हाथा चढ़े सिन्दूर। औलिया गौरी का पूत गनेश, गुग्गुल की धरुँ ढेरी, रिद्धि-सिद्धि गनपत धनेरी। जय गिरनार-पति। ॐ नमो स्वाहा।”

विधि-

सामग्री:- धूप या गुग्गुल, दीपक, घी, सिन्दूर, बेसन का लड्डू। दिन:- बुधवार, गुरुवार या शनिवार। निर्दिष्ट वारों में यदि ग्रहण, पर्व, पुष्य नक्षत्र, सर्वार्थ-सिद्धि योग हो तो उत्तम। समय:- रात्रि १० बजे। जप संख्या-१२५। अवधि:- ४० दिन।

किसी एकान्त स्थान में या देवालय में, जहाँ लोगों का आवागमन कम हो, भगवान् गणेश की षोडशोपचार से पूजा करे। घी का दीपक जलाकर, अपने सामने, एक फुट की ऊँचाई पर रखे। सिन्दूर और लड्डू के प्रसाद का भोग लगाए और प्रतिदिन १२५ बार उक्त मन्त्र का जप करें। प्रतिदिन के प्रसाद को बच्चों में बाँट दे। चालीसवें दिन

सवा सेर लड्डू के प्रसाद का भोग लगाए और मन्त्र का जप समाप्त होने पर तीन बालकों को भोजन कराकर उन्हें कुछ द्रव्य-दक्षिणा में दे। सिन्दूर को एक डिब्बी में सुरक्षित रखे। एक सप्ताह तक इस सिन्दूर को न छूए। उसके बाद जब कभी कोई कार्य या समस्या आ पड़े, तो सिन्दूर को सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने माथे पर टीका लगाए। कार्य सफल होगा।

□□□□ □□□□ □□□□□□

श्रीगणेश मन्त्र



देपालसर (चूरु) गणेशजी

“ॐ नमो सिद्ध-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-सर्व-स्त्री-पुरुष-आकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा।”

विधि- नित्य-कर्म से निवृत्त होकर उक्त मन्त्र का निश्चित संख्या में नित्य १ से १० माला ‘जप’ करे। बाद में जब घर से निकले, तब अपने अभीष्ट कार्य का चिन्तन करे। इससे अभीष्ट कार्य सुगमता से पूरे हो जाते हैं।

□□□□ □□□□ □□□□□□

श्रीगणेश मन्त्र



देपालसर (चूरु) गणेशजी

“ॐ नमो सिद्ध-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-सर्व-स्त्री-पुरुष-आकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ।”

विधि- नित्य-कर्म से निवृत्त होकर उक्त मन्त्र का निश्चित संख्या में नित्य १ से १० माला ‘जप’ करे। बाद में जब घर से निकले, तब अपने अभीष्ट कार्य का चिन्तन करे। इससे अभीष्ट कार्य सुगमता से पूरे हो जाते हैं।

बैरि-नाशक हनुमान ग्यारहवाँ

बैरि-नाशक हनुमान ग्यारहवाँ

विधि:- दूसरे से माँगे हुए मकान में, रक्षा-विधान, कलश-स्थापन, गणपत्यादि लोकपालों का पूजन कर हनुमान जी की प्रतिमा-प्रतिष्ठा करे। नित्य ११ या १२१ पाठ, ११ दिन तक करे। ‘प्रयोग’ भौमवार से प्रारम्भ करे। ‘प्रयोग’-कर्त्ता रक्त-वस्त्र धारण करे और किसी के साथ अन्न-जल न ग्रहण करे।

अञ्जनी-तनय बल-वीर रन-बाँकुरे, करत हूँ अर्ज दोऊ हाथ जोरी,
शत्रु-दल सजि के चढ़े चहूँ ओर ते, तका इन पातकी न इज्जत मेरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, लेहु तेहि झपट मत करहु देरी,
मातु की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, अञ्जनी-सुवन मैं सरन तोरी ।। १

पवन के पूत अवधूत रघु-नाथ प्रिय, सुनौ यह अर्ज महाराज मेरी,
अहै जो मुद्दई मोर संसार में, करहु अङ्ग-हीन तेहि डारौ पेरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, करहु तेहि चूर लंगूर फेरी,
पिता की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, पवन के सुवन मैं सरन तोरी ।। २

राम के दूत अकूत बल की शपथ, कहत हूँ टेरि नहि करत चोरी,
और कोई सुभट नहीं प्रगट तिहूँ लोक में, सकै जो नाथ सौँ बैन जोरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, लेहु तेहि पकरि धरि शीश तोरी,
इष्ट की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, राम का दूत मैं सरन तोरी ।। ३

कैसरी-नन्द सब अङ्ग वज्र सों, जेहि लाल मुख रंग तन तेज-कारी,
कपीस वर केस हैं विकट अति भेष हैं, दण्ड दौ चण्ड-मन ब्रह्मचारी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, करहु तेहि गर्द दल मर्द डारी,
कैसरी की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, वीर हनुमान मैं सरन तोरी । । ४

लीयो है आनि जब जन्म लियो यहि जग में, हर्यो है त्रास सुर-संत केरी,
मारि कै दनुज-कुल दहन कियो हेरि कै, दल्यो ज्यों सह गज-मस्त घेरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, हनौ तेहि हुमकि मति करहु देरी,
तेरी ही आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, वीर हनुमान मैं सरन तोरी । । ५

नाम हनुमान जेहि जानैं जहान सब, कूदि कै सिन्धु गढ़ लङ्का घेरी,
गहन उजारी सब रिपुन-मद मथन करी, जार्यो है नगर नहिं कियो देरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, लेहु तेही खाय फल सरिस हेरी,
तेरे ही जोर की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, वीर हनुमान मैं सरन तोरी । । ६

गयो है पैठ पाताल महि, फारि कै मारि कै असुर-दल कियो ढेरी,
पकरि अहि-रावनहि अङ्ग सब तोरि कै, राम अरु लखन की काटि बेरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, करहु तेहि निरधन धन लेहु फेरी,
इष्ट की आनि तोहि, सुनहु प्रभु कान से, वीर हनुमान मैं सरन तेरी । । ७

लगी है शक्ति अन्त उर घोर अति, परेऊ महि मुर्छित भई पीर ढेरी,
चल्यो है गरजि कै धर्यो है द्रोण-गिरि, लीयो उखारि नहीं लगी देरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, पटकों तेहि अवनि लांगुर फेरी,
लखन की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, वीर हनुमान मैं सरन तोरी । । ८

हन्यो है हुमकि हनुमान काल-नेमि को, हर्यो है अप्सरा आप तेरी,
लियो है अविधि छिनही में पवन-सुत, कयों कपि रीछ जै जैत टैरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, हनौ तेहि गदा हठी बज्र फेरी,
सहस्र फन की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, वीर हनुमान मैं सरन तोरी । । ९

कैसरी-किशोर स-रोर बरजोर अति, सौहै कर गदा अति प्रबल तेरी,
जाके सुने हाँक डर खात सब लोक-पति, छूटी समाधि त्रिपुरारी केरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, देहु तेहि कचरि धरि के दरेरी,
कैसरी की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, वीर हनुमान मैं सरन तोरी । । १०

लीयो हर सिया-दुख दियो है प्रभुहिं सुख, आई करवास मम हृदै बसेहितु,
ज्ञान की वृद्धि करु, वाक्य यह सिद्ध करु, पैज करु पूरा कपीन्द्र मोरी,
करत जो चुगलई मोर दरबार में, हनहु तेहि दौरि मत करौ देरी,
सिया-राम की आनि तोहि, सुनौ प्रभु कान दे, वीर हनुमान मैं सरन तोरी । । ११

ई ग्यारहो कवित्त के पुर के होत ही प्रकट भए,
आए कल्याणकारी दियो है राम की भक्ति-वरदान मोहीं ।
भयो मन मोद-आनन्द भारी और जो चाहै तेहि सो माँग ले,
देऊँ अब तुरन्त नहि करौ देरी,
जवन तू चहेगा, तवन ही होएगा, यह बात सत्य तुम मान मेरी । । १२

ई ग्यारहौं जो कहेगा तुरत फल लहेगा, होगा ज्ञान-विज्ञान जारी,
जगत जस कहेगा सकल सुख को लहेगा, बढ़ेगी वंश की वृद्धि भारी,

शत्रु जो बढैगा आपु ही लडि मरैगा, होयगी अंग से पीर न्यारी,
पाप नहिं रहैगा, रोग सब ढहैगा, दास भगवान अस कहत टेरी । । १३

यह मन्त्र उच्चारैगा, तेज तब बढैगा, धरै जो ध्यान कपि-रूप आनि,
एकादश रोज नर पढै मन पोढ करि, करै नहिं पर-हस्त अन्न-पानी ।
भौम के वार को लाल-पट धारि कै, करै भुईं सेज मन वृत ठानी,
शत्रु का नाश तब हो, तत्कालहि, दास भगवान की यह सत्य-बानी । । १४

□□□□-□□□□□-□□□□□□ □□□□□□□

सर्व-कामना-सिद्धि स्तोत्र
श्री हिरण्य-मयी हस्ति-वाहिनी, सम्पत्ति-शक्ति-दायिनी ।
मोक्ष-मुक्ति-प्रदायिनी, सद्-बुद्धि-शक्ति-दात्रिणी । । १
सन्तति-सम्बुद्धि-दायिनी, शुभ-शिष्य-वृन्द-प्रदायिनी ।
नव-रत्ना नारायणी, भगवती भद्र-कारिणी । । २
धर्म-न्याय-नीतिदा, विद्या-कला-कौशल्यदा ।
प्रेम-भक्ति-वर-सेवा-प्रदा, राज-द्वार-यश-विजयदा । । ३
धन-द्रव्य-अन्न-वस्त्रदा, प्रकृति पद्मा कीर्तिदा ।
सुख-भोग-वैभव-शान्तिदा, साहित्य-सौरभ-दायिका । । ४
वंश-वेलि-वृद्धिका, कुल-कुटुम्ब-पौरुष-प्रचारिका ।
स्व-ज्ञाति-प्रतिष्ठा-प्रसारिका, स्व-जाति-प्रसिद्धि-प्राप्तिका । । ५
भव्य-भाग्योदय-कारिका, रम्य-देशोदय-उद्घाषिका ।
सर्व-कार्य-सिद्धि-कारिका, भूत-प्रेत-बाधा-नाशिका ।
अनाथ-अधमोद्धारिका, पतित-पावन-कारिका ।
मन-वाञ्छितफल-दायिका, सर्व-नर-नारी-मोहनेच्छा-पूर्णिका । । ७
साधन-ज्ञान-संरक्षिका, मुमुक्षु-भाव-समर्थिका ।
जिज्ञासु-जन-ज्योतिर्धरा, सुपात्र-मान-सम्बर्द्धिका । । ८
अक्षर-ज्ञान-सङ्गतिका, स्वात्म-ज्ञान-सन्तुष्टिका ।
पुरुषार्थ-प्रताप-अर्पिता, पराक्रम-प्रभाव-समर्पिता । । ९
स्वावलम्बन-वृत्ति-वृद्धिका, स्वाश्रय-प्रवृत्ति-पुष्टिका ।
प्रति-स्पर्द्धी-शत्रु-नाशिका, सर्व-ऐक्य-मार्ग-प्रकाशिका । । १०
जाज्वल्य-जीवन-ज्योतिदा, षड्-रिपु-दल-संहारिका ।
भव-सिन्धु-भय-विदारिका, संसार-नाव-सुकानिका । । ११
चौर-नाम-स्थान-दर्शिका, रोग-औषधी-प्रदर्शिका ।
इच्छित-वस्तु-प्राप्तिका, उर-अभिलाषा-पूर्णिका । । १२
श्री देवी मङ्गला, गुरु-देव-शाप-निर्मूलिका ।
आद्य-शक्ति इन्दिरा, ऋद्धि-सिद्धिदा रमा । । १३
सिन्धु-सुता विष्णु-प्रिया, पूर्व-जन्म-पाप-विमोचना ।
दुःख-सैन्य-विघ्न-विमोचना, नव-ग्रह-दोष-निवारणा । । १४

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीसर्व-कामना-सिद्धि महा-यन्त्र-देवता-स्वरूपिणी श्रीमहा-माया महा-देवी महा-शक्ति महालक्ष्म्ये नमो नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीपर-ब्रह्म परमेश्वरी । भाग्य-विधाता भाग्योदय-कर्त्ता भाग्य-लेखा भगवती भाग्येश्वरी ॐ ह्रीं ।
कुतूहल-दर्शक, पूर्व-जन्म-दर्शक, भूत-वर्तमान-भविष्य-दर्शक, पुनर्जन्म-दर्शक, त्रिकाल-ज्ञान-प्रदर्शक, दैवी-ज्योतिष-
महा-विद्या-भाषिणी त्रिपुरेश्वरी । अद्भुत, अपुर्व, अलौकिक, अनुपम, अद्वितीय, सामुद्रिक-विज्ञान-रहस्य-रागिनी, श्री-
सिद्धि-दायिनी । सर्वोपरि सर्व-कौतुकानि दर्शय-दर्शय, हृदयेच्छित सर्व-इच्छा पूरय-पूरय ॐ स्वाहा ।
ॐ नमो नारायणी नव-दुर्गेश्वरी । कमला, कमल-शायिनी, कर्ण-स्वर-दायिनी, कर्णेश्वरी, अगम्य-अदृश्य-अगोचर-

अकल्प-अमोघ-अधारे, सत्य-वादिनी, आकर्षण-मुखी, अवनी-आकर्षिणी, मोहन-मुखी, महि-मोहिनी, वश्य-मुखी, विश्व-वशीकरणी, राज-मुखी, जग-जादूगरणी, सर्व-नर-नारी-मोहन-वश्य-कारिणी, मम करणे अवतर अवतर, नग्न-सत्य कथय-कथय ।

अतीत अनाम वर्तनम् । मातृ मम नयने दर्शन । ॐ नमो श्रीकर्णेश्वरी देवी सुरा शक्ति-दायिनी । मम सर्वेप्सित-सर्व-कार्य-सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा । ॐ श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीमहा-माया महा-शक्ति महा-लक्ष्मी महा-देव्यै विच्चे-विच्चे श्रीमहा-देवी महा-लक्ष्मी महा-माया महा-शक्त्यै क्लीं ह्रीं ऐं श्रीं ॐ ।

ॐ श्रीपारिजात-पुष्प-गुच्छ-धरिण्यै नमः । ॐ श्री ऐरावत-हस्ति-वाहिन्यै नमः । ॐ श्री कल्प-वृक्ष-फल-भक्षिण्यै नमः । ॐ श्री काम-दुर्गा पयः-पान-कारिण्यै नमः । ॐ श्री नन्दन-वन-विलासिन्यै नमः । ॐ श्री सुर-गंगा-जल-विहारिण्यै नमः । ॐ श्री मन्दार-सुमन-हार-शोभिण्यै नमः । ॐ श्री देवराज-हंस-लालिन्यै नमः । ॐ श्री अष्ट-दल-कमल-यन्त्र-रुपिण्यै नमः । ॐ श्री वसन्त-विहारिण्यै नमः । ॐ श्री सुमन-सरोज-निवासिन्यै नमः । ॐ श्री कुसुम-कुञ्ज-भोगिन्यै नमः । ॐ श्री पुष्प-पुञ्ज-वासिन्यै नमः । ॐ श्री रति-रूप-गर्व-गज्जनायै नमः । ॐ श्री त्रिलोक-पालिन्यै नमः । ॐ श्री स्वर्ग-मृत्यु-पाताल-भूमि-राज-कर्त्र्यै नमः ।

श्री लक्ष्मी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीशक्ति-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीदेवी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्री रसेश्वरी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्री ऋद्धि-यन्त्रेभ्यो नमः । श्री सिद्धि-यन्त्रेभ्यो नमः । श्री कीर्तिदा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीप्रीतिदा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीइन्दिरा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्री कमला-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीहिरण्य-वर्णा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीरत्न-गर्भा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीसुवर्ण-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीसुप्रभा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीपङ्कनी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीराधिका-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीपद्म-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीरमा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीलज्जा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीजया-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीपोषिणी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीसरोजिनी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीहस्तिवाहिनी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीगरुड-वाहिनी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीसिंहासन-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीकमलासन-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीरुष्टिणी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीपुष्टिणी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीतुष्टिनी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीवृद्धिनी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीपालिनी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीतोषिणी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीरक्षिणी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीवैष्णवी-यन्त्रेभ्यो नमः ।

श्रीमानवेष्टाभ्यो नमः । श्रीसुरेष्टाभ्यो नमः । श्रीकुबेराष्टाभ्यो नमः । श्रीत्रिलोकीष्टाभ्यो नमः । श्रीमोक्ष-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीभुक्ति-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीकल्याण-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीनवार्ण-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीअक्षस्थान-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीसुर-स्थान-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीप्रज्ञावती-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीपद्मावती-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीशंख-चक्र-गदा-पद्म-धरा-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीमहा-लक्ष्मी-यन्त्रेभ्यो नमः । श्रीलक्ष्मी-नारायण-यन्त्रेभ्यो नमः । ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीमहा-माया-महा-देवी-महा-शक्ति-महा-लक्ष्मी-स्वरूपा-श्रीसर्व-कामना-सिद्धि महा-यन्त्र-देवताभ्यो नमः ।

ॐ विष्णु-पत्नीं, क्षमा-देवीं, माध्वीं च माधव-प्रिया । लक्ष्मी-प्रिय-सखीं देवीं, नमाम्यच्युत-वल्लभाम् । ॐ महा-लक्ष्मी च विद्महे विष्णु-पत्नि च धीमहि, तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् । मम सर्व-कार्य-सिद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि:-

१. उक्त सर्व-कामना-सिद्धि स्तोत्र का नित्य पाठ करने से सभी प्रकार की कामनाएँ पूर्ण होती है ।

२. इस स्तोत्र से 'यन्त्र-पूजा' भी होती है:-

ईशान	ॐ	पूर्व	ॐ	आग्नेय
ॐ	अं अ	अ आ क	इ ई च	ॐ
	खं ख	ख ग घ ङ	छ ज झ	
उत्तर	ओ औ		उ रु ट	दक्षिण
	श ष स ह		ठ ड ढ ण	
ॐ	ए ऐ	लृ लृ	ऋ ऋ	ॐ
	य र ल व	प फ ब म म	त थ द व न	
वायव्य	ॐ	पश्चिम	ॐ	नैऋत्य

‘सर्वतोभद्र-यन्त्र’ तथा ‘सर्वारिष्ट-निवारक-यन्त्र’ में से किसी भी यन्त्र पर हो सकती है । ‘श्रीहिरण्यमयी’ से लेकर ‘नव-ग्रह-दोष-निवारण’- १४ श्लोक से इष्ट का आवाहन और स्तुति है । बाद में “ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं” सर्व कामना से पुष्प समर्पित कर धडयान करे और यह भावना रखे कि- ‘मम सर्वेप्सितं सर्व-कार्य-सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।’ फिर अनुलोम-विलोम क्रम से मन्त्र का जप करे-“ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीमहा-माया-महा-शक्त्यै क्लीं ह्रीं ऐं श्रीं ॐ ।” स्वेच्छानुसार जप करे । बाद में “ॐ श्रीपारिजात-पुष्प-गुच्छ-धरिण्यै नमः” आदि १६ मन्त्रों से यन्त्र में, यदि षोडश-पत्र हो, तो उनके ऊपर, अन्यथा यन्त्र में पूर्वादि-क्रम से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे । तदनन्तर ‘श्रीलक्ष्मी-तन्त्रेभ्यो नमः’ और ‘श्री सर्व-कामना-सिद्धि-महा-यन्त्र-देवताभ्यो नमः’ से अष्टगन्ध या जो सामग्री मिले, उससे ‘यन्त्र’ में पूजा करे । अन्त में ‘लक्ष्मी-गायत्री’ पढ़करपुष्पाञ्जलि देकर विसर्जन करे ।

गणेश-शाबर-मन्त्र की प्रमाणिकता

गणेश-शाबर-मन्त्र की प्रमाणिकता

पाठक बन्धुओं आज मैं कुछ अन्य प्रयोगों का प्रकाशन करने के लिये टाइप कर रहा था, किन्तु एक पाठक बन्धु श्री विक्रम जी की एक टिप्पणी ने प्रोत्साहित किया की चिट्ठे कि सामग्री के विषय में कुछ लिखूँ।

श्री विक्रम जी ने अपने कमेंट में “गणेश-शाबर-मन्त्र” के विषय में एक सुझाव दिया है, उन्हीं के शब्दों में-“HOWEVER I FEEL THAT THIS GANESH SHABAR MANTRA GIVEN AS ABOVE IS MISSING SOME WORDS IN THAT. HENCE I REQUEST YOU TO KINDLY RECHECK.”

इस विषय में मेरा नम्र निवेदन है की श्री विक्रमजी यदि उक्त मन्त्र को जो उनके पास उपलब्ध है, को भेजते तो निश्चय ही मेरे, पाठकों तथा साधक बन्धुओं के ज्ञान में वृद्धि होती। अतः आपसे अनुरोध है, कृपया आपके पास उपलब्ध मन्त्र भेजे, उसे सहर्ष प्रकाशित किया जायेगा।

यहाँ ध्यातव्य है, किसी मन्त्र, स्तोत्र आदि के असंख्य पाठान्तर, विधि-अन्तर सम्भव है; सम्भव ही नहीं अपितु हैं। इनके सामने (प्रकाशन) न होने पर आज ये हालत हो गई है की छिपाते-छिपाते आज यह विद्या ही लुप्त-प्राय हो चुकी है। सामान्य लोगों की श्रद्धा इस विद्या पर से उठ गई है। कुछ विज्ञ सज्जनों को विश्वास ही नहीं होता कि इन मन्त्रों द्वारा व्यक्ति की अभिलाषाओं की पूर्ति भी हो सकती है। (‘सिद्ध वशीकरण मन्त्र’ की पोस्ट १३.०८.२००८ के कमेंट देखेंगे तो माजरा समझ में आ जायेगा)

मन्त्र-विद् साधकों एवं ‘मन्त्र-विद्या’ के प्रशंसकों, जिज्ञासुओं के लिए यह गम्भीर विचार का विषय है। आमजन में इन सबके के प्रति भ्रान्ति फैली है, किन्तु आस्थावान् सज्जन इन पाठान्तरों, साधन-विधि के अन्तरों से भी लाभ उठा रहे हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण “श्रीदुर्गासप्तशती”, “श्रीरामचरितमानस”, चारों वेद, अठारह पुराण, असंख्य आगम-निगम-तन्त्र शास्त्र हैं, जो असंख्य पाठान्तरों सहित वर्तमान में भी प्रचलित हैं। मैंने स्वयं ने [aspundir's weblog](http://aspundir'sweblog) पर देवी कवच को अन्तर सहित दिया है। मेरे पास बहुत से विधान हैं, जो पाठान्तरों से भरपूर हैं। समय आने पर उनको भी संदर्भ सहित प्रकाशित किया जायेगा। अस्तु आवश्यकता है, विस्तृत शोध की जिसके विषय में इस ब्लोग की साइड-बार में भी मैंने टिप्पणी डाली है।

मैं श्री विक्रम जी जैसे सुधी पाठकों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस विषय में ध्यान आकृष्ट किया है। आशा है सुधी-विज्ञ-जन, पाठक-गण इसी प्रकार स्नेह बनाए रखेंगे।

नवनाथ-शाबर-मन्त्र

नवनाथ-शाबर-मन्त्र

“ॐ नमो आदेश गुरु की। ॐकारे आदि-नाथ, उदय-नाथ पार्वती। सत्य-नाथ ब्रह्मा। सन्तोष-नाथ विष्णुः, अचल अचम्भे-नाथ। गज-बेली गज-कन्थडि-नाथ, ज्ञान-पारखी चौरङ्गी-नाथ। माया-रूपी मच्छेन्द्र-नाथ, जति-गुरु है गोरख-नाथ। घट-घट पिण्डे व्यापी, नाथ सदा रहें सहाई। नवनाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई। ॐ नमो आदेश गुरु की।।”

विधि:- पूर्णमासी से जप प्रारम्भ करे। जप के पूर्व चावल की नौ ढेरियाँ बनाकर उन पर ९ सुपारियाँ मौली बाँधकर नवनाथों के प्रतीक-रूप में रखकर उनका षोडशोपचार-पूजन करे। तब गुरु, गणेश और इष्ट का स्मरण कर आह्वान करे। फिर मन्त्र-जप करे। प्रतिदिन नियत समय और निश्चित संख्या में जप करे। ब्रह्मचर्य से रहे, अन्य के हाथों का भोजन या अन्य खाद्य-वस्तुएँ ग्रहण न करे। स्वपाकी रहे। इस साधना से नवनाथों की कृपा से साधक धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। उनकी कृपा से ऐहिक और पारलौकिक-सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

विशेष:- ‘शाबर-पद्धति’ से इस मन्त्र को यदि ‘उज्जैन’ की ‘भर्तृहरि-गुफा’ में बैठकर ९ हजार या ९ लाख की संख्या में जप लें, तो परम-सिद्धि मिलती है और नौ-नाथ प्रत्यक्ष दर्शन देकर अभीष्ट वरदान देते हैं।

□□□□□-□□□□□□

नवनाथ-स्तुति

“आदि-नाथ कैलाश-निवासी, उदय-नाथ काटै जम-फाँसी । सत्य-नाथ सारनी सन्त भाखै, सन्तोष-नाथ सदा सन्तन की राखै । कन्थडी-नाथ सदा सुख-दाई, अञ्चति अचम्भे-नाथ सहाई । ज्ञान-पारखी सिद्ध चौरङ्गी, मत्स्येन्द्र-नाथ दादा बहुरङ्गी । गोरख-नाथ सकल घट-व्यापी, काटै कलि-मल, तारै भव-पीरा । नव-नाथों के नाम सुमिरिए, तनिक भस्मी ले मस्तक धरिए । रोग-शोक-दारिद नशावै, निर्मल देह परम सुख पावै । भूत-प्रेत-भय-भञ्जना, नव-नाथों का नाम । सेवक सुमरे चन्द्र-नाथ, पूर्ण होय सब काम । ।”

विधि:- प्रतिदिन नव-नाथों का पूजन कर उक्त स्तुति का २१ बार पाठ कर मस्तक पर भस्म लगाए । इससे नवनाथों की कृपा मिलती है । साथ ही सब प्रकार के भय-पीड़ा, रोग-दोष, भूत-प्रेत-बाधा दूर होकर मनोकामना, सुख-सम्पत्ति आदि अभीष्ट कार्य सिद्ध होते हैं । २१ दिनों तक, २१ बार पाठ करने से सिद्धि होती है ।

□□-□□□-□□□□□

नव-नाथ-स्मरण

“आदि-नाथ ओ स्वरूप, उदय-नाथ उमा-महि-रूप । जल-रूपी ब्रह्मा सत-नाथ, रवि-रूप विष्णु सन्तोष-नाथ । हस्ती-रूप गणेश भतीजै, ताकु कन्थड-नाथ कही जै । माया-रूपी मछिन्दर-नाथ, चन्द-रूप चौरङ्गी-नाथ । शेष-रूप अचम्भे-नाथ, वायु-रूपी गुरु गोरख-नाथ । घट-घट-व्यापक घट का राव, अमी महा-रस स्त्रवती खाव । ॐ नमो नव-नाथ-गण, चौरासी गोमेश । आदि-नाथ आदि-पुरुष, शिव गोरख आदेश । ॐ श्री नव-नाथाय नमः । ।”

विधि:- उक्त स्मरण का पाठ प्रतिदिन करे । इससे पापों का क्षय होता है, मोक्ष की प्राप्ति होती है । सुख-सम्पत्ति-वैभव से साधक परिपूर्ण हो जाता है । २१ दिनों तक २१ पाठ करने से इसकी सिद्धि होती है ।

□□ □□□□□□ □□ □□□□□□

आय बढ़ाने का मन्त्र

प्रार्थना-विष्णु-प्रिया लक्ष्मी, शिव-प्रिया सती से प्रगट हुई कामाक्षा भगवती । आदि-शक्ति युगल-मूर्ति महिमा अपार, दोनों की प्रीति अमर जाने संसार । दोहाई कामाक्षा की, दोहाई दोहाई । आय बढ़ा, व्यय घटा, दया कर माई । मन्त्र- “ॐ नमः विष्णु-प्रियायै, ॐ नमः शिव-प्रियायै, ॐ नमः कामाक्षायै, ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा । ”

विधि- किसी दिन प्रातः स्नान कर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर ११ बार गाय के घी से हवन करे । नित्य ७ बार जप करे । इससे शीघ्र ही आय में वृद्धि होगी ।

□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□

अभीष्ट फल दायक बाह्य शान्ति सूक्त

(कुल-देवता की प्रसन्नता के लिए अमोघ अनुभूत सूक्त)

नमो वः पितरो, यच्छिव तस्मै नमो, वः पितरो यतृस्योन तस्मै ।
नमो वः पितरः, स्वधा वः पितरः । । 1
नमोऽस्तु ते निरऋर्तु, तिग्म तेजोऽयस्यमयान विचृता बन्ध-पाशान् ।
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति । तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे । । 2
नमोऽस्त्वसिताय, नमस्तिरश्चिराजये । स्वजाय वभ्रवे नमो, नमो देव जनेभ्यः । । 3....(More)

June 17, 2009 – 11:02 am

टोटके

१०. व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व पत्नी या माता द्वारा यथासंभव भगवान की पूजा कराए, उसके पश्चात् पेड़े का प्रसाद बांटें तथा नौकरों को एक-एक रुपया बांटें । ऐसा नियमपर्वक प्रत्येक शक्रवार को करते रहें ।

“你 們 誰 是 誰！ 我 們 是 誰 的 兒 女—— 我 們 是 誰 的 兒 女，
我 們 是 誰 的 兒 女 我 們 是 誰 的 兒 女 我 們 是 誰 的 兒 女！
我 們 是 誰 的 兒 女—— 我 們 是 誰 的 兒 女 我 們 是 誰 的 兒 女，
我 們 是 誰 的 兒 女—— 我 們 是 誰 的 兒 女—— 我 們 是 誰 的 兒 女！”

३. व्यवसाय स्थल पर श्रीयंत्र का विशाल रंगीन चित्र लगा लें, जिससे सबको दर्शन होते रहें।

कर-न्यास:- ॐ ह्रां क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ हूं क्लूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं क्लैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हः क्लः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि-न्यास:- ॐ ह्रां क्लां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ हूं क्लूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं क्लैं कवचाय हुम् । ॐ ह्रौं क्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ॐ हः क्लः अस्त्राय फट् ।

ध्यान:-

रक्तांगीं शव-वाहिनीं त्रि-शिरसीं रौद्रां महा-भैरवीम्,
धूम्राक्षीं भय-नाशिनीं घन-निभां नीलालकाऽलंकृताम् ।
खड्ग-शूल-धरीं महा-भय-रिपुध्वंशीं कृशांगीं महा-
दीर्घांगीं त्रि-जटीं महाऽनिल-निभां ध्यायेत् पिनाकीं शिवाम् । ।

मन्त्र:- “ॐ ह्रीं क्लीं पुण्य-वती-महा-माये सर्व-दुष्ट-वैरि-कुलं निर्दलय क्रोध-मुखि, महा-भयास्मि, स्तम्भं कुरु विक्रौं स्वाहा । । ” (३००० जप)

मूल स्तोत्र:-

खड्ग-शूल-धरां अम्बां, महा-विध्वंसिनीं रिपून् ।
कृशांगींच महा-दीर्घां, त्रिशिरां महोरगाम् । ।
स्तम्भनं कुरु कल्याणि, रिपु विक्रोशितं कुरु ।
ॐ स्वामि-वश्यकरी देवी, प्रीति-वृद्धिकरी मम । ।
शत्रु-विध्वंसिनी देवी, त्रिशिरा रक्त-लोचनी ।
अग्नि-ज्वाला रक्त-मुखी, घोर-दंष्ट्री त्रिशूलिनी । ।
दिगम्बरी रक्त-केशी, रक्त पाणि महोदरी ।
यो नरो निष्कृतं घोरं, शीघ्रमुच्चाटयेद् रिपुम् । ।
। । फल-श्रुति । ।

इमं स्तवं जपेन्नित्यं, विजयं शत्रु-नाशनम् ।
सहस्र-त्रिशतं कुर्यात् । कार्य-सिद्धिर्न संशयः । ।
जपाद् दशांशं होमं तु, कार्यं सर्षप-तण्डुलैः ।
पञ्च-खाद्यै घृतं चैव, नात्र कार्या विचारणा । ।

। । श्रीशिवार्णवे शिव-गौरी-सम्वादे विभीषणस्य रघुनाथ-प्रोक्तं शत्रु-विध्वंसनी-स्तोत्रम् । ।

विशेष:-

यह स्तोत्र अत्यन्त उग्र है । इसके विषय में निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान अवश्य देना चाहिए-
(क)

(ख) प्रथम और अन्तिम आवृत्ति में नामों के साथ फल-श्रुति मात्र पढ़ें । पाठ नहीं होगा ।

(ग) घर में पाठ कदापि न किया जाए, केवल शिवालय, नदी-तट, एकान्त, निर्जन-वन, श्मशान अथवा किसी मन्दिर के एकान्त में ही करें ।

(घ) पुरश्चरण की आवश्यकता नहीं है । सीधे ‘प्रयोग’ करें । प्रत्येक ‘प्रयोग’ में तीन हजार आवृत्तियाँ करनी होगी ।

शत्रु-विध्वंसिनी स्तोत्र के एक अन्य विधान के लिये [हेम-ज्योत्सना](#) देखें ।

□□□□□□□□ □□□□□□

देवाकर्षण मन्त्र

“□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□-□□□□□-□□□□□□□ □□□□ □□□-□□□□-□□□ □□□-
□□□ □□-□□ □□ □□□□□□ । ”

विधि:- कभी-कभी ऐसा होता है कि पूजा-पाठ, भक्ति-योग से देवी-देवता साधक से सन्तुष्ट नहीं होते अथवा साधक

000000 00000 00 000000-000000 000 0000 000000-000000 00000 000-
0000000000 00 000000 !

□□□□-□□□□□□□□-□□□□□□

“你好好想想，你好好想想，好好想想！
好好想想，好好想想，好好想想，好好想想！
好好想想，好好想想！”

१०. “आगिशनी माल खानदानी । इन्नी अम्मा, हव्वा यूसुफ जुलैखानी । ‘फलानी’ मुझ पै हो दीवानी । बरहक अब्दुल कादर जीलानी ।”

विधि:- पूरा प्रयोग २१ दिन का है, किन्तु ११ दिन में ही इसका प्रभाव दिखाई देने लगता है। इस प्रयोग का दुरुपयोग कदापि नहीं करना चाहिए, अन्यथा स्वयं को भी हानि हो सकती है। साधना-काल में मांस, मछली, लहसुन, प्याज, दूध, दही, घी आदि वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए। स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहन कर साधना करनी चाहिए। पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। लम्बी धोती या स्वच्छ वस्त्र को 'अहराना' की तरह बाँध कर साधना करनी चाहिए। शेष बची हुई धोती या कपड़े को शरीर पर लपेटते हुए सिर को ढँक लेना चाहिए। एक ही कपड़े से पूरा शरीर ढँकना चाहिए, जैसे हिन्दू-स्त्रियाँ पहनती हैं।

उक्त मन्त्र की साधना रात्रि में, जब 'नमाज' आदि का समय समाप्त हो जाता है, तब करनी चाहिए। साधना करने से पहले मुसलमानी विधि से वजू करे। हो सके, तो नहा ले। जप या तो हिन्दू-विधि से करे या मुसलमानी विधि से। हिन्दू-विधि में माला का दाने अपनी तरफ घुमाए जाते हैं। मुसलमानी विधि में माला के दाने अपनी तरफ से आगे की ओर खिसकाए जाते हैं। प्रतिदिन ११०० बार जप करे। यदि ११ दिन से पहले 'साध्य' आ जाए, तो न तो अधिक घुल-मिल कर बात करे, न ही किसी प्रकार का क्रोध करे। कोई बहाना बनाकर उसके पास से हट जाए। यदि ११ दिन में कार्य न हो तो २१ दिन तक जप करे। मन्त्र में 'फलानी' की जगह 'साध्या' का नाम लेना चाहिए।

Please see more mantra [000-0000000000](#)

विविध कार्य-साधक अम्बिका मन्त्र

ॐ आठ-भुजी अम्बिका, एक नाम ओंकार ।
 खट्-दर्शन त्रिभुवन में, पाँच पण्डवा सात दीप ।
 चार खूँट नौ खण्ड में, चन्दा सूरज दो प्रमाण ।
 हाथ जोड़ विनती करूँ, मम करो कल्याण । ।
 नित्य 108 जप करके जो भी प्रार्थना की जायेगी, पूरी होगी । सिद्ध मन्त्र है, अलग से सिद्ध करना आवश्यक नहीं है । नित्य कुछ जप पर्याप्त है ।

8 1 6

3 5 7

4 9 2

कुछ प्रयोग निम्नलिखित है -

चुटकी में राख लेकर 3 बार अभिमन्त्रित करके मारने से लगी आग बुझ जायेगी, भूत-प्रेतादि दूर होंगे, बुखार उतर जायेगा, नजर आदि दूर होगी ।

शत्रुनाशार्थ- 1 नारियल, 2 नींबू, एक पाव गुड़, 1 पैसा भर सिंदूर, अगरबत्ती और नींबू बंध सके, इतना लाल कपड़ा । शनिवार को रात में कण्डे की आग जलाकर पूर्वाभिमुख बैठकर कण्डे की राख 1 चुटकी लेकर उस पर 1 बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की दिशा में फेंके, ऐसा तीन बार करें । फिर कहे कि “मेरे अमुक शत्रु का नाश करो” और 1 नींबू काटकर आग पर निचोड़ें । फिर शेष बचा नींबू और सिन्दूर कपड़े में लपेट कर रात भर अपने सिरहाने रखे और सवेरे पहर 3-4 बजे उसे शत्रु के घर में फेंक दे या किसी से फिंकवा दें । नारियल, अगरबत्ती और गुड़ किसी देवी मन्दिर में चढ़ा दें । प्रसाद स्वयं न खाए । शत्रु का नाश होगा ।

□□□□□□ □□□□ □□□□□□

दुर्गा शाबर मन्त्र

“ॐ ह्रीं श्रीं चामुण्डा सिंह वाहिनीं बीस हस्ती भगवती, रत्न मण्डित सोनन की माल । उत्तर पथ में आन बैठी, हाथ सिद्ध वाचा ऋद्धि-सिद्धि । धन-धान्य देहि देहि, कुरु कुरु स्वाहा । ”

उक्त मन्त्र का सवा लाख जप कर सिद्ध कर लें । फिर आवश्यकतानुसार श्रद्धा से एक माला जप करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं । लक्ष्मी प्राप्त होती है । नौकरी में उन्नति और व्यवसाय में वृद्धि होती है ।

□□□□□□□□□□-□□□□□□-□□□□□□□□-□□□□□□□□

□□□□□□□□□□-□□□□□□-□□□□□□□□-□□□□□□□□

(प्रस्तुत विधान के प्रत्येक मन्त्र के ११००० ‘□□’ एवं दशांश ‘□□□’ से सिद्धि होती है । हनुमान जी के मन्दिर में, ‘□□□□□□□□□□’ की माला से, ब्रह्मचर्य-पूर्वक ‘जप करें । नमक न खाए तो उत्तम है । कठिन-से-कठिन कार्य इन मन्त्रों की सिद्धि से सुचारु रूप से होते हैं ।)

१० ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, वायु-सुताय, अञ्जनी-गर्भ-सम्भूताय, अखण्ड-ब्रह्मचर्य-व्रत-पालन-तत्पराय, धवली-कृत-जगत्-त्रितयाय, ज्वलदग्नि-सूर्य-कोटि-समप्रभाय, प्रकट-पराक्रमाय, आक्रान्त-दिग्-मण्डलाय, यशोवितानाय, यशोऽलंकृताय, शोभिताननाय, महा-सामर्थ्याय, महा-तेज-पुञ्जः-विराजमानाय, श्रीराम-भक्ति-तत्पराय, श्रीराम-लक्ष्मणानन्द-कारणाय, कवि-सैन्य-प्राकाराय, सुग्रीव-सख्य-कारणाय, सुग्रीव-साहाय्य-कारणाय, ब्रह्मास्त्र-ब्रह्म-शक्ति-ग्रसनाय, लक्ष्मण-शक्ति-भेद-निवारणाय, शल्य-विशल्यौषधि-समानयनाय, बालोदित-भानु-मण्डल-ग्रसनाय, अक्षकुमार-छेदनाय, वन-रक्षाकर-समूह-विभञ्जनाय, द्रोण-पर्वतोत्पाटनाय, स्वामि-वचन-सम्पादितार्जुन, संयुग-संग्रामाय, गम्भीर-शब्दोदयाय, दक्षिणाशा-मार्तण्डाय, मेरु-पर्वत-पीठिकार्चनाय, दावानल-कालाग्नि-रुद्राय, समुद्र-लंघनाय,

सीताऽऽश्वासनाय, सीता-रक्षकाय, राक्षसी-संघ-विदारणाय, अशोक-वन-विदारणाय, लंका-पुरी-दहनाय, दश-ग्रीव-शिरः-कृन्तकाय, कुम्भकर्णादि-वध-कारणाय, बालि-निर्वहण-कारणाय, मेघनाद-होम-विध्वंसनाय, इन्द्रजित-वध-कारणाय, सर्व-शास्त्र-पारंगताय, सर्व-ग्रह-विनाशकाय, सर्व-ज्वर-हराय, सर्व-भय-निवारणाय, सर्व-कष्ट-निवारणाय, सर्वापत्ति-निवारणाय, सर्व-दुष्टादि-निर्बर्हणाय, सर्व-शत्रुच्छेदनाय, भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-ध्वंसकाय, सर्व-कार्य-साधकाय, प्राणि-मात्र-रक्षकाय, राम-दूताय-स्वाहा । ।

२० ॐ नमो हनुमते, रुद्रावताराय, विश्व-रुपाय, अमित-विक्रमाय, प्रकट-पराक्रमाय, महा-बलाय, सूर्य-कोटि-समप्रभाय, राम-दूताय-स्वाहा । ।

□□□□ □□□□ □□□□□□ (□□□□□□□□ □□□□)

गणेश शाबर मन्त्र (पाठान्तर सहित)

निम्नलिखित मन्त्र “श्री विक्रम जी” ने पाठकों की सुविधा के लिए, शोध के लिए भेजा है,

“GANAPAT VEER BHOOKHE MASAAN, JO PHAL MANGOO SO PHAL DET,
GANAPAT DEKHE, GAJAPAT DAREY, GANAPAT KE CHHATR SE BADSHAH
DAREY, MUKH DEKHE RAJA PRAJA DAREY, HAATA CHADHEY SINDOOR
AULIYA GAURI KAA PUTRA, GOOGAL KHEY KAROONGA DHERI, RIDDHI
SIDDHI GANAPAT LAYE GHANERI, GIRNAR PATI AUM NAMO SWAHA!!”

“गणपत वीर भूखे मसान, जो फल माँगू सो फल देत, गणपत देखे, गजपत डरे, गणपत के छत्र से बादशाह डरे,
मुख देखे राजा-प्रजा डरे, हाथा चढ़े सिन्दूर औलिया गौरी का पुत्र, गूगल खेये करूँगा देरी, रिद्धि-सिद्धि गणपत लाये
घनेरी, गिरनार पति ॐ नमो स्वाहा”

□□□□-□□□□-□□□□□□

काली-शाबर-मन्त्र

सम्मानীয় पाठकों,

□□□□-□□□□□□ के एक पाठक “□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□” जो अब इस साइट के सहयोगी भी हैं,
का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, ने □□□□-□□□□□□ के लिये “काली-शाबर-मन्त्र” भेजा है जो इस प्रकार है-

Kali Kali Maha kali, Inder ki beti Brahma ki sali
Piti bhar bhar rakt payali, ud baithi pipal ki dali
Dono hath bajai tali, Jahan jai vajra ki tali,
Vahan na aye dushman hali,
Duhai kamro kamakhya naina yogni ki,
Ishwar mahadev gora parvti ki,
Duhai veer masan ki.

40 din 108 bar roj jap kar sidh kare, paryog ke time padh kar teen bar jor se tali bajaye, jahan tak tali

ki awaj jayegi, dushman ka koi var ya bhoot pret asar nahi karega.

“काली काली महा-काली, इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली । पीती भर भर रक्त प्याली, उड़ बैठी पीपल की डाली ।
दोनों हाथ बजाए ताली । जहाँ जाए वज्र की ताली, वहाँ ना आए दुश्मन हाली । दुहाई कामरो कामाख्या नैना योगिनी
की, ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की, दुहाई वीर मसान की । । ”

विधि:- प्रतिदिन १०८ बार ४० दिन तक जप कर सिद्ध करे । प्रयोग के समय पढ़कर तीन बार जोर से ताली बजाए । जहाँ तक ताली की आवाज जायेगी, दुश्मन का कोई वार या भूत, प्रेत असर नहीं करेगा ।

श्री काली चरण कम्बोज की ई-मेल आई-डी है:-kambojkc70@yahoo.co.in

श्री कम्बोज का एक बार पुनः हार्दिक अभिनन्दन तथा आभार। आपसे अनुरोध है इसी प्रकार स्नेह बनाए रखें।

□□□-□□□□□□□ □□□□□□

महा-लक्ष्मी मन्त्र

“राम-राम क्ता करे, चीनी मेरा नाम। सर्व-नगरी बस में करूँ, मोहूँ सारा गाँव।

राजा की बकरी करूँ, नगरी करूँ बिलाई। नीचा में ऊँचा करूँ, सिद्ध गोरखनाथ की दुहाई।।”

विधि:- जिस दिन गुरु-पुष्य योग हो, उस दिन से प्रतिदिन एकान्त में बैठ कर कमल-गट्टे की माला से उक्त मन्त्र को १०८ बार जपें। ४० दिनों में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, फिर नित्य ११ बार जप करते रहें।

□□□□□□□-□□□□ □□□□□□

लक्ष्मी-पूजन मन्त्र

“आवो लक्ष्मी बैठो आँगन, रोरी तिलक चढ़ाऊँ। गले में हार पहनाऊँ।। बचनों की बाँधी, आवो हमारे पास। पहला वचन श्रीराम का, दूजा वचन ब्रह्मा का, तीजा वचन महादेव का। वचन चूके, तो नर्क पड़े। सकल पञ्च में पाठ करूँ। वरदान नहीं देवे, तो महादेव शक्ति की आन।।”

विधि:- दीपावली की रात्रि को सर्व-प्रथम षोडशोपचार से लक्ष्मी जी का पूजन करें। स्वयं न कर सके, तो किसी कर्म-काण्डी ब्राह्मण से करवा लें। इसके बाद रात्रि में ही उक्त मन्त्र की ५ माला जप करें। इससे वर्ष-समाप्ति तक धन की कमी नहीं होगी और सारा वर्ष सुख तथा उल्लास में बीतेगा।

रुठी हुई स्त्री का वशीकरण-

“मोहिनी माता, भूत पिता, भूत सिर वेताल। उड़ ऐं काली ‘नागिन’ को जा लाग। ऐसी जा के लाग कि ‘नागिन’ को लग जावै हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख, न लेटे सुख, न सोते सुख। सिन्दूर चढ़ाऊँ मंगलवार, कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख, काया तड़प तड़प मर जाए। चलो मन्त्र, फुरो वाचा। दिखाओ रे शब्द, अपने गुरु के इल्म का तमाशा।।”

विधि- मन्त्र में ‘नागिन’ शब्द के स्थान पर स्त्री का नाम जोड़े। शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से ८ दिन पहले साधना प्रारम्भ करे। एक शान्त एकान्त कमरे में रात्रि में १० बजे शुद्ध वस्त्र धारण कर कम्बल के आसन पर बैठे। अपने पास जल भरा एक पात्र रखे तथा ‘दीपक’ व धूपबत्ती आदि से कमरे को सुवासित कर मन्त्र का जप करे। ‘जप’ के समय अपना मुँह स्त्री के रगने की स्थान की ओर रखे। एकाग्र होकर घड़ी देखकर ठीक दो घण्टे तक जप करे। जिस समय मन्त्र का जप करे, उस समय स्त्री का स्मरण करता रहे। स्त्री का चित्र हो, तो कार्य अधिक सुगमता से होगा। साथ ही, मन्त्र को कण्ठस्थ कर जपने से ध्यान केन्द्रित होगा। इस प्रयोग में मन्त्र जप की गिनती आवश्यक नहीं है। उत्साह-पूर्वक पूर्ण संकल्प के साथ जप करे।

□□□ □□□□□□-

१०. “धूल-धूल-तू धूल की रानी, जगमोहन सुन मोर बानी। जल से धुला आन पढ़ूँ, तब पार्वती वरदान धूलि पड़ि। दू अमुकी अंग, जो जलती आती उमंग, उसका मन लावे निकाल, हमारी वश्यता करे स्वीकार।।”

□□□□- सिद्धि हेतु ‘होली’ की रात्रि में ११ माला जप करे। प्रयोग के समय साध्या के बाँए पैर की मिट्टी लेकर उसे उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करे। मन्त्र में ‘अमुकी’ शब्द के स्थान पर साध्या का नाम कहे। फिर एक चुटकी मिट्टी साध्या के सिर पर सावधानी-पूर्वक डाले।

२० ॐ नमो आदेश गुरु का, धूली-धूली विकट चाँदनी पर मारु धूली । फिर दिवाना महल तजे, घर-दुआर तजे, ठाठा भरतार तजे । देवी-दिवानी एक सठी फलवान, तू नरसिंह वीर । 'अमुकी' को उठाय ला । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा । ”

विधि- 'सिद्धि' हेतु किसी शनिवार से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे । जप २१ दिन तक करे । प्रयोग के समय जिस स्त्री की मृत्यु शनिवार को हुई हो, श्मशान-क्रिया के पश्चात् उसके पैर की ओर का अंगार (कोयला) लाए तथा चौराहे की चुटकी भर धूल लेकर उसमें कोयले को पीस कर मिलाए । फिर उक्त मन्त्र से उसे ७ बार अभिमन्त्रित कर युक्ति-पूर्वक साध्या के शरीर पर डाले ।

३० “ॐ नमः धूली धूलेश्वरी, मातु परमेश्वरी, चञ्चती जय इनारन । चोप भरे छार-छारते में हटे, देता घर-बार, करे तो मशान लौटे । जीवे तो पाव लौटे । वचन बाँधी । 'अमुकी' को धाई लाव, मातु धूलेश्वरी । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा । ठः ठः स्वाहा । ”

□□□□- सिद्धि हेतु ७ शनिवार (केवल शनिवार को) उक्त मन्त्र १४४ बार जपे । १४४ की संख्या को ध्यान में रखे । कम या ज्यादा न जपे । अन्तिम ७वें शनिवार को जप कर, 'रविवार' के दिन जो स्त्री मरे व जिसका रविवार को ही दाह-कर्म हो, उसकी चिता से तीन चुटकी राख लेकर उसमें चौराहे की थोड़ी धूल मिलाए । फिर उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर 'साध्या' पर डाले । मन्त्र में 'अमुकी' के स्थान पर साध्या का नाम ले ।

४० “खरी सुपारी, टाम नगारी । राजा परजा, खरी पियारी । मन्त्र पढ़ लगाऊ, तो रहिया कलेजा लावे दौड़, जीवित चाटै पग-तली । मूवे सेवे मसान या शब्द की मारी, न लावे तो जयी हनुमन्त की आन । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा । ”

□□□□- पहले 'सूर्य' या 'चन्द्र' ग्रहण में ३ माला जप करे । फिर सामान्य दिनों में 'शनिवार' से जप प्रारम्भ करे तथा नित्य २१ दिन तक एक माला जप करे । प्रयोग के समय सुपारी पर उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर फूँक मारे और साध्या को खाने के लिए दे ।
